इकाई . 1 व्याकरण स्तोःश्चुनाश्चुः से शश्छोऽटि तक

इकाई की रूप रेखा

1.1 प्रस्तावना

व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित यह पहली इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि हल् सन्धि कहाँ पर होती है? अतः इस इकाई में मुख्य रूप से हल् सन्धि के विषय में वर्णन किया गया है। जहाँ पर दो हल् अर्थात् व्यंजन वर्णो को जहाँ पर मेल किया गया हो उसे हल् सन्धि कहते है।

व्याकरण शास्त्र में हल् सन्धि का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। शब्द का ज्ञान व्याकरण शास्त्र के बिना सम्भव नहीं है। शब्दों के अर्थो के ज्ञान के लिए व्याकरण शास्त्र का ज्ञान करना अत्यन्त आवश्यक है।

इस इकाई के अध्ययन से हल् सन्धि को ज्ञान करते हुए, उसकी महत्ता को आप भली–भाँति समझ सकेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप हल् सन्धि में अनेक महत्त्वपूर्ण सन्धियों का अध्ययन करेंगे।

- श्चुत्व सन्धि के विषय में आप भली–भांति परिचित होंगे।
- ष्टुत्व सन्धि के विषय में आप भली–भांति परिचित होंगे।
- जश्त्व सन्धि के विषय में आप भली–भांति परिचित होंगे।
- हल् सन्धि में परसवर्ण सन्धि के विषय में भली–भांति परिचित होंगे।
- चर्त्व सन्धि के विषय में आप भली भांति परिचित होंगे।
- छत्व सन्धि के विषय में आप भली–भांति परिचित होंगे।

1.3 अनुनासिक सन्धि

अनुनासिक आदेश विधायक विधि सूत्र

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा 8 ।4।44।। यरःपदान्तस्यानुनासिके परेऽननुनासिको वा स्यात् ।एतन्मुरारिः एतद् मुरारिः ।

अर्थ :– अनुनासिक वर्ण यदि पर में हो तो पदान्त यर् प्रत्याहार के वर्ण के स्थान पर अनुनासिक आदेश होता है विकल्प से।

जो वर्ण मुख और नासिका दोनों से बोला जाता है। उसे अनुनासिक कहते है। मुखनासिका वचनोऽनुनासिकः यह सूत्र ही प्रमाण है। अनुनासिक अच् और हल् दोनों प्रकार के वर्ण होते हैं। किन्तु पदान्त यर् से परे अनुनासिक वर्ण कहीं नहीं देखा जाता है। अतः यहां पर हल् वर्ण अनुनासिक का ही ग्रहण किया जाता है। अनुनासिक हल् वर्ण पांच है। 1–य्, 2–म, 3–ङ्, 4–ण, 5– न । इन पांच वर्णो में से किसी वर्ण के परे होने पर पदान्त यर् को विकल्प करके अनुनासिक होगा। यर् प्रत्याहार में केवल हकार को छोड़कर सभी हल् वर्ण आते है। स्थानेऽन्तरतमः सूत्र से वहीं वर्ण आदेश होगा जिसका यर् के साथ स्थान तुल्यता हो। यथा कवर्ग के वर्ण को ङ, चवर्ग के वर्ण को ञ, ट वर्ग के वर्ण को ण, टवर्ग के वर्ण को न, तथा पवर्ग के वर्ण स्थान पर म आदेश होता है।

उदाहरण :–एतन्मुरारिः एतत् + मुरारिः यहाँ पर पहले **झलां जशोऽन्ते** सूत्र से पदान्त झल् प्रत्याहार का वर्ण है एतत् का तकार, इसको जश्त्व तकार को दकार आदेश होकर एतद् + मुरारिः प्रयोग बना। यहां पर सूत्र लगा – **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा।** यह सूत्र कहता है कि अनुनासिक वर्ण यदि पर में हो तो पदान्त पर, प्रत्याहार के वर्ण को

विकल्प से अनुनासिक हो जाता है। इसलिए एतद् +मुरारि में अनुनासिक वर्ण पर में है मुरारिः का मकार और पूर्व में पदान्त यर् प्रत्याहार का वर्ण है एतद् का दकार। अब एतद् के दकार के स्थान पर अनुनासिक वर्ण भ, म, ङ, ण, न ये पांचों वर्ण एक साथ प्राप्त होते हैं। एक वर्ण के स्थान पर पांच अनुनासिक वर्णो का प्राप्ति होना अनियम् हुआ। उस अनियम को रोकने के लिए **स्थानेऽन्तरतमः** सूत्र से स्थान मिलाने से दन्त स्थान वाला वर्ण द् के स्थान पर दन्त स्थान वाला वर्ण अनुनासिक नकार आदेश होकर एतन् + मुरारिः प्रयोग बना। वर्ण सम्मेलन होकर **एतन्मुरारिः** प्रयोग सिद्ध होता है। अनुनासिक विकल्प से होता है। जिस पक्ष में अनुनासिक वर्ण नकार नहीं होगा उस पक्ष में **एतद् मुरारिः** ही प्रयोग सिद्ध होता है।**इसके बाद अनुनासिक नित्य होता है।**

वार्तिक :–

प्रत्यये भाषायां नित्यम् । तन्मात्रम् । चिन्मयम्।

अर्थ :–अनुनासिक वर्ण आदि में हो, ऐसे प्रत्यय के परे होने पर लौकिक प्रयोगों में पदान्त यर् के स्थान पर नित्य ही अनुनासिक वर्ण आदेश होता है।

उदाहरण :–तन्मात्रम् – तत् + मात्रम् यहां सूत्र लगा **झलां जशोऽन्ते।** इस सूत्र के द्वारा पदान्त झल् प्रत्याहार का वर्ण है तत् का तकार। इस तकार के स्थान पर जश्त्व दकार होकर तद् + मात्रम बना। इसके बाद वार्तिक लगा–**प्रत्यये भाषायां नित्यम्** यह वार्तिक कहता है कि अनुनासिक वर्ण आदि में हो तो ऐसे प्रत्यय के परे होने पर लौकिक प्रयोगों में पदान्त यर् के स्थान पर नित्य अनुनासिक वर्ण आदेश होता है। तद् + मात्रम् यहां पर प्रत्यय है मात्रम् उसके आदि में अनुनासिक वर्ण है मकार, ऐसे मकार के परे होने परे पदान्त यर् प्रत्याहार का जो वर्ण है तद् का दकार । उस दकार के स्थान पर नित्य अनुनासिक पांचों वर्ण प्राप्त होते हैं। इसलिए एक वर्ण के सथान पर पांच वर्णो की होना अनियम है उस अनियम् को रोकने के लिए **स्थानेन्तरमः** सूत्र के द्वारा पदान्त यर् प्रत्याहार का वर्ण तद् के दकार के स्थान पर दन्त स्थानिक वर्ण नकार होता है अर्थात् द के स्थान पर नित्य अनुनासिक नकार होकर **तन्+मात्रम्** बना। वर्ण सम्मेलन होकर **तन्मात्रम्** प्रयोग सिद्ध होता है।

चिन्मयम्–उसी प्रकार चित् + मयम् यहां पर झलां जशोऽन्ते सूत्र से चित् के तकार के स्थान पर जश्त्व दकार होकर चिद् + मयम् बना। उसके बाद इस वार्तिक के द्वारा नित्य अनुनासिक नकार होकर चिन् + मयम् बना। तथा वर्ण सम्मेलन होकर **चिन्मयम्** प्रयोग सिद्ध होता हैं।

अनुनासिक सन्धि का उदाहरण

विग्रह	**सन्धि**	**आदेश**
एतद् +मुरारिः	एत्न + मुरारिः	एतन्मुरारिः
अग्निचिद् +नयति	अग्निचिन् + नयति	अग्निचिन्नयतिः
तद् + नः	तन् + नः	तन्नः
दिग् + नागः	दिङ् + नागः	दिङ्नागः
वाग् + मयम्	वाङ् + मयम्	वाङ्मयम्
जगद् + नाथः	जगन् + नाथः	जगन्नाथः
मद् + याता	मन् + याता	मन्याता
किञ्चिद् + मात्रम्	किञ्चिन् + मात्रम्	किञ्चिन्मात्रम्
वाग् + यलम्	वाङ्. + यलम्	वाङ्यलम्
सद् + मार्गः	सन् + मार्गः	सन्मार्ग
इड् + निषेधः	इण् + निषेधः	इणनिषेधः

षड् + मासा	षण् + मासाः	षण्मासाः
चिद् + मात्रम्	चिन् +मात्रम्	चिन्मात्रम्
चिद् + मयम्	चिन् +मयम्	चिन्मयम्

हल् सन्धि में परसवर्ग सन्धि का उदाहरण

परसवर्ण विधायक विधि सूत्र :– 69 तोर्लि 8 । 4 । 60।।तवर्गस्य लकारे परे परसवर्गः स्यात्। तल्लयः । विद्वाँल्लिखति। नस्यानुनासिको लः।

अर्थ :–लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है।

भाव यह कि तवर्ग से जब लकार परे हो तो तवर्ग के स्थान पर लकार का परसवर्ण आदेश किया जायेगा। लकार का लकार के सिवाय अन्य कोई सवर्ण नहीं होगा। अतः तवर्ग के स्थान पर सवर्ण लकार ही आदेश होगा। लकार दो प्रकार के होते है। 1–अनुनासि (लं), अननुनासिक (ल)। **स्थानेऽन्तरमः** सूत्र की सहायता से तवर्गस्थ अनुनासिक वर्ण के स्थान पर अनुनासिक लकार तथा दूसरा अननुनासिक वर्ण के स्थान पर अननुनासिक लकार होगा। तवर्ग में नकार के सिवाय दूसरा कोई वर्ण अनुनासिक नहीं है। अतः अनुनासिक लकार हुआ। उदाहरण –

तल्लयः– तद् + लयः यहाँ पर सूत्र लगा–**तोर्लि** यह कहता है कि तवर्ग से लकार पर में हो तो, तवर्ग के स्थान में परसवर्ग होता है। यहाँ पर तवर्ग का वर्ण है तद् का दकार तथा पर में लयः का लकार होने के कारण दकार के स्थान में परसवर्ण लकार होकर तल् + लयः प्रयोग बना। वर्ण सम्मेलन होकर तल्लयः प्रयोग सिद्ध होता है।

विद्वाँल्लिखति :–विद्वान् + लिखति इस दशा में **तोर्लि** सूत्र लगा। यह सूत्र कहता है कि लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर परसवर्ग आदेश होता है। यहां पर विद्वान् + लिखति में तवर्ग का वर्ण है अनुनासिक न् तथा पर में वर्ण है लिखति का लकार इसलिए अनुनासिक नकार के स्थान पर परसवर्ण लॅंकार होकर विद्वालँ् लिखति बना। तथा वर्ण सम्मेलन विद्वॉल्लिखति प्रयोग सिद्ध होता है।

परसवर्ण सन्धि का उदाहरण :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
तत् + लयः	तल् + लयः	तल्लयः
कश्चिद्+लभते	कश्चिल् + लभते	कश्चिल्लभते
तद् + लीनः	तल् + लीनः	तल्लीनः
उद् + लेखः	उल् + लेखः	उल्लेखः
यद् + लक्षणम्	यल् + लक्षणम्	यल्लक्षणम्
जगद् + लीयतेः	जगल् +लीयतेः	जगल्लीयते
चिद् + लयः	चिल् + लयः	चिल्लयः
विपद् + लीनः	विपल् + लीनः	विपल्लीनः
कुशान् + लुनाति	कुशालँ् + लुनाति	कुशाल्लुँनाति
महान् + लाभः	महालॅ + लाभः	महाल्लाँभः
हनुमान + लंकादहति	हनुमालँ + लंकादहति	हनुमाल्लंकादहति
धनवान् + लुनीते	धनवालँ + लुनीते	धनवाल्लुँनीते
विद्युत् + लेखा	विद्युलँ + लेखा	विद्युल्लेँखा

इस प्रकार लकार परसवर्ण सन्धि का अन्य उदाहरण भी देंखे।

पूर्व सवर्ण सन्धि :–

अब हल् सन्धि में पूर्व सवर्ण सन्धि का उदाहरण दिया जा रहा है –

पूर्व सवर्ण विधायक विधि सूत्र –

70 – उदः स्था–स्तम्भोः पूर्वस्य 8 ।4 । 61।।

उदः परयोः स्था–स्तम्भोः पूर्वसवर्णः।।

अर्थ :–उद् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ को पूर्व सवर्ण हो।

उदः यहां पर दिग्योग पंचमी है। अर्थात् 'उद्' से किसी दिशा में स्थित में स्था और स्तम्भ को पूर्व सवर्ण होगा। वर्णो में दो ही दिशा सम्भव हो सकती है एक पर और दूसरा पूर्व। अब यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या उद् से पूर्वस्थित स्था और स्तम्भ को पूर्व सवर्ण हो या पर स्थित स्था और स्तम्भ को पूर्व सवर्ण हो? इन समस्याओं के निवृत्ति के लिए अग्रिम परिभाषां सूत्र लिखते है।

नियम कारक परिभाषा सूत्र

71 तस्मादित्युत्तरस्य 1 । 1 । 61।।

पंचमी निर्देशेन क्रियमाणं कार्य वर्णान्तरेणाऽव्यवहितस्य परस्य ज्ञेयम्।

अर्थ – पंचम्यन्त पद के निर्देश से किया जाने वाला कार्य अन्य वर्णों के व्यवधान से रहित पर के स्थान पर जानना चाहिए।

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य आदि सूत्रों में **उदः** ऐसा पंचम्यन्त पद उससे निर्दिष्ट

कार्य किसी वर्ण के व्यवधान के बिना उत् आदि से परे में **स्था, स्तम्भ** के स्थान पर पूर्व सवर्ण होता है।

उद्+स्थानम्, उद्+स्तम्भनम् इन दोनों स्थानों पर 'उद्' से परे अव्यवहित स्था और स्तम्भ विद्यमान है। अतः इनके स्थान पर पूर्वसवर्ण करना है। अब **स्था** और **स्तम्भोः** के षष्ठयन्त होने से **अलोऽन्त्यस्य** सूत्र से इनके अन्त्य अल् के स्थान पर पूर्व सवर्ण प्राप्त होता है। इस पर **अलोऽन्त्यस्य** की अपबाद परिभाषा सूत्र लिखते है–

नियम कारक परिभाषा सूत्र –

72 आदेः परस्य 1। 1 । 53 ।।

परस्य यद विहितं तत् तस्यादेर्वोध्यम्। इति सस्य थः।

अर्थ – पर के स्थान पर जो कार्य का विधान किया जाता है वह कार्य उस (पर) के आदि वर्ण के स्थान पर समझना चाहिए।

उद् + स्थानम्, उद् + स्तम्भनम् यहां **तस्मादित्युत्तरस्य** परिभाषा सूत्र की सहायता से **'उदः स्था स्तम्भोः पूर्वस्य'** इस सूत्र के द्वारा पहले स्था स्तम्भ को पूर्व सवर्ण होना था। अब इस परिभाषा सूत्र के द्वारा पर के आदि वर्ण अर्थात् **स्था** और **स्तम्भ** के आदि वर्ण स् के स्थान पर पूर्वसवर्ण होगा।

अब यहां पर यह विचार प्रस्तुत करते है कि उद् + स्था और उद् + स्तम्भनम् यहां पर सकार के स्थान पर दकार का सवर्णो का वर्ण कौन सा होगा? क्योंकि पूर्व में जो वर्ण **द्** है उसका सवर्णो वर्ण पांच है त, थ, द, ध, न। एक वर्ण के स्थान पर एक ही सवर्ण वर्ण होगा पांच सम्भव नहीं है। इस शंका के निवारण के लिए **स्थानेऽन्तरतमः** सूत्र आया। यह कहता है कि प्राप्त हुए आदेशों में अत्यन्त सदृश वर्ण आदेश होगा। अब हमें यहां पर त, थ, द, ध, न इन पांच वर्णो में से सकार का अत्यन्त सृदश वर्ण ढूंढना है। यदि स्थान कृत तुल्यता देखते है तो स का स्थान दन्त है तथा त, थ, द, ध, न इन सबका स्थान दन्त है। अतः इस सादृश्यता से काम नहीं चलेगा। अब इसके बाद यत्नकृत सादृश्य देखते है। यत्न दो प्रकार के है यह पहले संज्ञा प्रकरण में बताया गया

है। 1 – आभ्यन्तर प्रयत्न 2– वाहय प्रत्यन । अब आभ्यन्तर प्रयत्न में स का सबसे सन्निकट वर्ण कौन सा है? स का आभ्यन्तर प्रयत्न में इषद्विवृत प्रत्यत्न है तथा त ध द ध न इन पांच वर्णो का स्पृष्ट प्रत्यन है। इसलिए सकार के स्थान में इन पांचों वर्णो में से कोई नहीं होगा। अब देखते है स का वाहय प्रयत्न में कौनसा वर्ण सादृश्य है। सकार का बाहय प्रयत्न में विवार, श्वास, अद्योष और महाप्राण वाला कौन सा वर्ण है। उनको निम्न प्रकार से देंखे –

त् का वाहय प्रयत्न विवार श्वास अघोष और अल्पप्राण
थ का वाहय प्रयत्न विवार, श्वास, घोष और महाप्राण
द का वाहय प्रयत्न संवाद, नांद, घोष और महाप्राण
ध का वाहय प्रयत्न सवार, नाद, घोष और महाप्राण
न का वाहय प्रयत्न सवार, नाद, घोष और महाप्राण

इससे सिद्व होता है कि वाह्य प्रयत्नों की दृष्टि से थकार ही सकार के समान है। अतः सकार के स्थान में पूर्व सवर्ण थकार ही होता है। इस प्रकार उद् + थ् + थानम्, उद् + थतम्भनम् बना। अब इसके बाद अगला सूत्र प्रवृत होता है।

वैकल्पिक लोप विधायक विधिसूत्र

73 झरो झरि सवर्णे 8 । 4 । 65 ।।

हलः परस्य झरो वा लोपः सवर्णे झरि।

अर्थ– हल् से परे झर् का लोप होता है विकल्प से, सवर्ण झर् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो।

हल् प्रत्याहार में पुरे व्यंजन वर्ण आते है। इस हल् प्रत्याहार के वर्ण से परे झर् प्रत्याहार (झ, भ, घ, ढ़, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष स) का वर्ण हो तो लोप हो जाता है। सवर्णे झर प्रत्याहार का वर्ण हो तो।

उद् + थ् थानम्, उद् + थ तम्भनम् यहाँ पर हल् प्रत्याहार का वर्ण है, उद् का दकार। उस हल् वर्ण द से परे झर् प्रत्याहार का वर्ण है, थ् थानम् का पूर्व थ् और उस थकार से सवर्णे झर् प्रत्याहार का वर्ण है थानम् का थ् तथा थ तम्भनम् का थ्। इसलिए विकल्प थकार का लोप होकर उद् + थानम् बना। जिस पक्ष में लोप नहीं होगा, उस पक्ष में उद् + थ् थानम् तथा उद् + थ् तम्भनम् बना। अब इसके बाद अगला सूत्र प्रवृत हो रहा है–

चर् आदेश विधायक विधि सूत्र

74 खरि च 8 । 4 । 54 ।।

खरि झलां चरः स्युः। इत्युदोदस्य तः।

उत्थानम्। उत्तम्भनम्

अर्थ :–खर् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो झल् के स्थान में चर् आदेश होता है।

इत्युदोदस्यः तः इस सूत्र से दकार को तकार हो गया।

लोप होने के बाद उद् + थानम् ! उद् + तम्भनम् अब यहाँ पर सूत्र लगा – खरि च यह सूत्र कहता है कि खर् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो झल् प्रत्याहार के वर्ण के स्थान पर चर् प्रत्याहार का वर्ण होता है। उद् + थानम् उद् तम्भनम् यहाँ पर खर् प्रत्याहार का वर्ण पर में है, उद् + थानम् में थकार तथा उद् तम्भनम् में तकार! उससे पूर्व झल् प्रत्याहार का वर्ण है उद् में द् । इस दकार के स्थान में चर् प्रत्याहार का वर्ण त् होकर उत् + थानम् । उत् तम्भनम् बना। उसके बाद वर्ण सम्मेलन होकर उत्थानम् और उत्तम्यनम् प्रयोग सिद्व होता है और जिस पक्ष में झरो झरि सवर्णे से लोप नहीं होगा, उस पक्ष में उद् + थ् + थानम्, उद् + थ् + तम्भनम् खरि च से चर्त्व तथा वर्ण सम्मेलन उत्थ्यानम्, उत्थ्तम्भनम् प्रयोग सिद्व होता है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी देंखे –

विग्रह	आदेश	सन्धि
उद् + स्थानम्	उत् + थानम्	उत्थानम्
उद् + स्तम्भनम्	उत् + तम्भनम्	उत्तम्भनम्
उद् + स्थापयति	उत् + थापयति	उत्थापयति
भेद् + तुम	भेत् + तुम	भेत्तुम्
उद् + स्थितः	उत् + थितः	उत्थितः
उद् + स्तम्भते	उत् + तम्भते	उत्तम्भते
लिम् + सा	लिप् + सा	लिप्सा
उद् + स्थातव्यम्	उत् + थात्व्यम्	उत्थातव्यम्
युयुध् + सवः	युयुत् + सवः	युयुत्सवः
तद्न + त्वम्	तत् + त्वम्	तत्त्वम्
त्वद् + तः	त्वत् + तः	त्वत्तः
तद् + तरति	तत् + तरति	तत्तरति
यद् + तनोति	यत् + तनोति	यत्तनोति

अभी तक आपने हल् सन्धि में नित्य पूर्वसवर्ण सन्धि पढ़ा। अब इसके बाद विकल्प से पूर्व सवर्ण होता है। इसके विषय में अध्ययन करेंगे।

वैकल्पिक पूर्वसवर्ण विधायक विधि सूत्र

75 झयो होऽन्यतरस्याम् 8। 4। 62।।

झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः।

नादस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य तादृशो वर्ग चतुर्थः।
वाग्घरिः वाग्हरिः।

<u>अर्थ</u> :– झय् से परे हकार के स्थान पर विकल्प से पूर्व सवर्ण होता है। नाद्, पोष संवार और महाप्राण यत्न वाले हकार के स्थान पर वैसा वर्गो का चतुर्थ वर्ण होगा।उदाहरण यथा :–

वाग्धरिः__वाक् + हरिः यहाँ पर सर्व प्रथम झलां जशोऽन्ते सूत्र के द्वारा पदान्त झल् प्रत्याहार का वर्ण के स्थान पर जश्त्व ग् होकर वाग् + हरिः बना। अब इसके बाद सूत्र लगा झयो होऽन्तरस्याम् यह सूत्र कहता है कि पदान्त झय् प्रत्याहार (झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ ध ठ थ च त त क प) को वर्ण से परे हकार के स्थान पर पूर्व सवर्ण अर्थात् गकार का सवर्ण आदेश करना है। गकार का सवर्णे में से हकार के स्थान

पर कौन सा, गकार का सवर्णो पांच वर्ण (क ख ग घ ड.) है। इन पांचों वर्णो में से हकार के स्थान पर कौन सा वर्ण हो? ऐसी शंका उत्पन्न होने पर स्थानेऽन्तरमः सूत्र उपस्थित होकर कहता है कि जो हकार के साथ अत्यन्त सदृश हो वही हकार के स्थान पर आदेश किया जाये। अब यदि स्थान कृत आदेश मिलाते है तो हकार के स्थान पर क वर्ग का पांचों वर्ण प्राप्त होते है। आभ्यन्तर प्रयत्न भी हकार के साथ तुल्य नहीं मिलता है क्योंकि क वर्ग का प्रत्यन है स्पृष्ट तथा हकार का प्रयत्न है इषद्विवृत इसलिए भिन्न होने से ये भी नहीं प्राप्त है। अतः बाह्य प्रयत्न वाला हकार ही है। इसलिए हकार के स्थान पर विकल्प से घकार होकर वाग् + घरिः बना। वर्ण सम्मेलन होकर वाग्घरिः प्रयोग सिद्ध होता है और पूर्व सवर्ण विकल्प पक्ष में वाग्हरिः प्रयोग सिद्ध होता है। इस सूत्र के कुछ अन्य उदाहरण है :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
वाक् + हरिः	वाग् + घरिः	वाग्घरिः
तद् + हानिः	तद् + घानि	तद्घानिः
अच् + हीनम्	अज् + झीनम्	अज्झीनम्
मधुलिड् + हसति	मधुलिड् + ढसति	मधुलिड्ढ़सति
अच् + हस्वः	अज् + झस्वः	अज्झस्वः
दिग् + हस्ती	दिग् + घस्ती	दिग्घस्ती
दूरात् + हूते	दूराद् + घूते	दूराद्धूते
समुद्र + हर्ता	समुद् + धर्ता	समुद्धर्ता
मित्वाद् + ह्रस्वं	मित्वाद् + ध्रस्वः	मित्वाद्ध्रस्वः
सम्पद् + ह्रस्वंः	सम्पद् + ध्रस्वः	सम्पद्ध्रस्वः
वणिग् + हस्ती	वणिग् 4 धस्ती	वणिग्घस्ती
रत्नुड् + हरति	रत्नमुड् + ढरति	रत्नुमुड्ढरतिं

निष्कर्ष :– यह है कि झय् प्रत्याहार क वर्ग से परे हकार घकार च वर्ग से परे हकार को झकार, ट वर्ग से परे हकार को ढकार, त वर्ग से हकार को धकार तथा पवर्ग से परे हकार को भकार विकल्प से होता है। पक्ष में हकार भी रहता है। इस प्रकार पूर्व सवर्ण सन्धि समाप्त होता है।

वैकल्पिक छत्व विधायक विधि सूत्र

76. शश्छोऽटि 8 । 4 । 6 ।।झयः परस्य शस्य छो वा अटि। तद् + शिव इत्यत्र दस्य श्चुत्वेन जकारे कृते खरि चेति जकारस्य चकारः। तच्छिवः तच्शिवः।

अर्थ :– झय से परे शकार को 1 विकल्प से छकार होता है। अट् परे हो तो। पूर्व में झय् प्रत्याहार (झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प) का वर्ण हो पर में अट् प्रत्याहार का वर्ण हो और मध्य में शकार हो तो शकार के स्थान में छकार विकल्प से होता है और एक पक्ष में शकार ही रहेगा।

उदाहरण :–

तच्छिवः तच्शिवः तत् + शिवः यहां सबसे पहले झलां जशोऽन्ते सूत्र से तत् के तकार के स्थान पर जश्त्व दकार होकर तद् + शिवः बना। यहाँ पर तवर्ग और शकार का योग होने से दकार के स्थान पर स्तोःश्चुना इचुः सूत्र के द्वारा श्चुत्व जकार होकर तज् + शिवः बना। इसके बाद जकार के स्थान पर खरि च सूत्र से चकार होकर तच् + शिवः बना। इसके बाद यह सूत्र लगा शश्छोऽटि। यह सूत्र कहता है कि झय प्रत्याहार

से परे शकार के स्थान पर छकार आदेश विकल्प से होता है। अट् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो यहां पर झय प्रत्याहार का वर्ण है। तच् का चकार इससे परे शकार है, शिव का शकार। उस शकार से परे अट् प्रत्याहार का वर्ण है शि में इकार। अतः इसलिए शकार के स्थान में छकार होकर तच् + छिवः बना। वर्ण सम्मेलन होकर तच्छिवः प्रयोग सिद्ध होता है। शकार के स्थान छकार विकल्प से होता है। जिस पक्ष में शकार स्थान में छकार नहीं होगा, उस पक्ष में तच्शिवः प्रयोग सिद्ध होता है। इस प्रकार अन्य उदाहरण निम्नानुसार है देंखे :–

विग्रह	आदेश	सन्धि
तद् + शिवः	तच् + छिवः	तच्छिवः
मत् + शिरः	मच् + छिरः	मच्छिरः
जगत् + शान्तिः	जगच् + छान्तिः	जगच्छान्तिः
यावत् + शक्यम्	यावच् + छक्यम	यावच्छक्यम्
जगत् + शिष्यः	जगच् + छिष्यः	जगच्छिष्यः
वाक् + शेते	वाक् + छेते	वाक्छेते
कश्चित् + शेते	कश्चिच् + छेते	कश्चिच्छेते
प्राक् + शान्तिः	यावच् + छान्तिः	यावच्छान्तिः
मत् + श्वसुरः	मच् + वभुरः	मच्छ्वशुरः

वार्तिक :–

छत्वममिति वाच्यम् । तच्छ्लोके।

<u>अर्थ</u> :– पदान्त झय् से परे शकार को विकल्प से छकार आदेश होता है अम् परे हो तो। <u>तच्छ्लोकेन</u> तद् + श्लोकेन यहाँ **स्तोः श्चुना श्चुः** इस सूत्र से दकार को श्चुत्व जकार होकर तज् + श्लोकेन बना। उसके बाद खरि च सूत्र से चर्त्व चकार होकर तच् + श्लोकेन बना। अब यहाँ वार्तिक लगा– छत्वमितिवाच्यम् यह कहता है कि पदान्त झय् प्रत्याहार के वर्ण से परे शकार को छकार होता है विकल्प से अम् प्रत्याहार का वर्ण परे हो तो। यहाँ पदान्त झय् प्रत्याहार का वर्ण है तच् में चकार। उससे परे श्लोकेन का शकार है उस शकार से अम् प्रत्याहार का वर्ण लोकेन का ल्। इसलिए शकार के स्थान पर छकार होकर तच् + छ्लोकेन बना। वर्ण सम्मेलन तच्छलोकेन प्रयोग सिद्ध होता है।

इस वार्तिक का अन्य उदाहरण :–

विग्रह	आदेश	सन्धि
तद् + श्लोकेन	तच् + छलोकेन	तच्छ्लोकेन
तद् + श्लिष्टः	तच् + छ्लिष्टः	तच्छिलष्टः
एतद् + श्मश्रु	एतच् + छ्मश्रु	एतच्छ्मश्रु
तद् + श्लक्ष्णः	तच् + छ्लक्ष्णः	तच्छलक्ष्णः
सकृत् + श्लेष्मा	सकृच् + छेलष्मा	सकृच्छ्लेष्मा
भूभृत् + श्लाघा	भूभृत् + छलाघा	भू भृच्छलाघा

अभ्यास प्रश्न

अति लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. व्यजंनों का व्यंजनों के साथ मेल को क्या कहते है ?
2. रामश्शेते किस सूत्र का उदाहरण है ?
3. स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र का उदाहरण क्या है?

4. सकार तवर्ग के स्थान पर षकार टवर्ग के साथ होने पर क्या आदेश होता है?
5. ष्टुना ष्टुः सूत्र का उदाहरण क्या है?
6. पेष्टा किस सूत्र का उदाहरण है?
7. ष्टुत्व का निषेध करता है?
8. षण्णाम् किस वार्तिक का उदाहरण है?
9. षन्षष्ठः का विग्रह क्या है?
10. लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर क्या होता है?
11. तच्छिवः का विग्रह क्या है?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सकार और तवर्ग के स्थान, शकार और चवर्ग के साथ योग होने पर सन्धि होती है–

    (क) प्रकृतिभाव सन्धि (ख) गुण सन्धि
    (ग) श्चुत्व सन्धि (घ) दीर्घ सन्धि

2. विश्नः में श्चुत्व का निषेध होता है :–

    (क) शात् सूत्र से (ख) आद् गुणः सूत्र से
    (ग) इको यणचि सूत्र से (घ) अनचि च सूत्र से

3. शकार से परे तवर्ग के स्थान पर –

    (क) गुण नहीं होता (ख) श्चुत्व नहीं होता है
    (ग) दीर्घ नहीं होता (घ) यण् नहीं होता है

4. ष्टुत्व का विधान करने वाला सूत्र है :–

    (क) ष्टुना ष्टुः (ख) स्तोः श्चुना श्चुः
    (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) वृद्धिरेचि

5. तोःषि सूत्र से ष्टुत्व का निषेध कहाँ पर होता है :–

    (क) सन्षष्ठः (ख) इट्टे
    (ग) वागीशः (घ) रामश्शेते

6. सन्षष्ठः में किस सूत्र से ष्टुत्व प्राप्त है :–

    (क) तोःषि (ख) ष्टुनाष्टु
    (ग) अदेङ् गुणः (घ) आद् गुणः

7. वागीशः में सन्धि हुई है :–

    (क) गुण (ख) दीर्घ
    (ग) पररूप (घ)जश्त्व

8. खरि च सूत्र का उदाहरण है –

    (क) उत्थानम् (ख) तन्मात्रम्
    (ग) तल्लयः (घ) वागीशः

9. वाग्घरिः में सन्धि हुई है :–

    (क) जश्त्व (ख) पूर्व सवर्ण
    (ग) परसवर्ण (घ) दीर्घ

10. शकार को छकार होता है :–

(क) तोः षि (ख) ष्टुनाष्टुः
(ग) झलां जशोऽन्ते (घ) शश्छोऽटि

1.4 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप हल् सन्धि के विषय मे भली–भांति परिचित होंगे। हल् सन्धि में भी अनेक सन्धियां हैं। उनके सन्धियों में सें कुछ सन्धियों का इस इकाई में वर्णन किया है। यथा श्चुत्व सन्धि, श्चुत्व सन्धि का ही निषेध भी किया गया है। ष्टुत्व सन्धि, कही ष्टुत्व सन्धि का निषेध भी किया गया है। पर सवर्ण सन्धि, पूर्व सवर्ण सन्धि, चर्त्व सन्धि, छत्व सन्धि। इन सन्धियों का मुख्य रूप से सूत्र उदाहरण सहित व्याख्या किया गया है। पूर्ण सवर्ण सन्धि, पूर्व सवर्ण सन्धि का व्याख्या अच् सन्धि में की गयी है किन्तु वहां पर अचों की पर सवर्ण, परसवर्ण के विषय में बताया गया है यहां पर हल् अर्थात् व्यजंन वर्णो पर सवर्ण पूर्व सवर्ण के विषय में सम्यग् रूप से वर्णन किया गया है।

1.5 शब्दावली

शब्द	अर्थ
रामश्शेते	राम सोता है।
रामश्चिनोति	राम चुनता है।
सच्चित	सत् और ज्ञान
शार्ङ्गिन्ज्जय	हे विष्णो ! तुम्हारी जय हो
विश्नः	
प्रश्नः	
रामण्षष्ठः	राम छठा है
रामष्टीकते	राम जाता है।
पेष्टा	पीसने वाला, पीसेगा
तट्टीका	उसकी टीका अथवा वह टीका
चक्रिष्ढौकसे	हे चक्रधारी तुम जाते हो
षट् सन्तः	छः सज्जन
षट् ते	वे छः
इट्टे	स्तुती करता है
सर्पिष्टमम्	उत्तम घी
षण्णाम्	छः का
षण्णवतिः	छियानवे
षण्णगर्यः	छः नगरिया
षन्षष्ठः	छठा श्रेष्ठ
वागीशः	वृहस्पति
एतन्मुररिः	ये मुरारि है
तन्मात्रम्	उतना ही
चिन्मयम्	चेतन स्वरूप
तल्लयः	उसका नाश
विद्वालँ लिखति	विद्वान लिखता है
उत्थानम्	
वाग्धरिः	वाणी का शेर अर्थात् बोलने में चतुर

ताच्छिवः	वह शिव
तच्छलोकेन	उस श्लोक से

1. 6. अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अति लघु–उत्तरीय प्रश्न – **1**– हल् सन्धि 2– स्तोः श्चुना श्चुः 3– सच्चित
4– ष्टुत्व 5– राषष्ठः 6–ष्टुनाष्टुः 7– नपदान्ताटटोरनाम् 8– अनाम्नवति नग–रीणामिति वाच्यम् 9– सन् + षष्ठः 10– परसवर्ण 11– तद् + शिव
बहुविकल्पीय प्रश्न– 1– ग 2– क 3– ख 4– क 5– क 6– ख 7– घ
8– क 9– ख 10– घ

1. 7 सदर्भ ग्रन्थ सूची

1–ग्रन्थ नाम	**लेखक**	**प्रकाशक**
लघुसिद्धान्त कौमुदी	सुरेन्द्र शास्त्री	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी
2–वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी .	भट्टोजिदीक्षित	शारदा निकेतन वी, कस्तुरवानगर सिगरा वाराणसी
3–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
महाभाष्यम्	पतंजलि	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

1. 8 उपयोगी पुस्तकें

1–ग्रन्थ नाम	**लेखक**	**प्रकाशक**
लघुसिद्धान्त कौमुदी	सुरेन्द्र शास्त्री	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

1.9. निबन्धात्मक प्रश्न

1. रामश्चिनोति इस प्रयोग का सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।

इकाई . 2 : व्याकरण, मोऽनुस्वारः से नश्च तक

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना :

व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित खण्ड चार की दूसरी इस इकाई की अध्ययन से आप बता सकते है कि हल् सन्धि कहां पर होती है ? इस इकाई में मुख्य रूप से हल् सन्धि के विषय में वर्णन किया गया है।

व्याकरण शास्त्र में हल् सन्धि का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है हल् सन्धि में कुछ अनेक महत्त्वपूर्ण सन्धियों का वर्णन किया गया है जो इस इकाई में आप परिचित होंगे।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप हल् सन्धि को ज्ञान करते हुए उसकी महत्ता भी समझा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य

- अनुस्वार सन्धि के विषय में आप परिचित होगें।
- अनुस्वार को पर सवर्ण होता है इसके विषय में आप परिचित होंगे।
- धुडागम के विषय में आप परिचित होंगे।
- मकारादेश के विषय में आप परिचित होंगे।
- कुक् तुक् आगम के विषय में आप परिचित होंगे।
- नकारादेश के विषय में आप परिचित होंगे।

2.3 अनुस्वार सन्धि

अनुस्वार विधायक विधि सूत्र

77—मोऽनुस्वार : 8 । 5 । 23।

मान्तस्य पदस्यानुस्वारो हलि। हरिं वन्दे।

अर्थ :— हल् परे हो तो मकारान्त पद के स्थान पर अनुस्वाद आदेश होता है।

हरिं वन्दे :— हरिम् + वन्दे (यहाँ पर हरिम् शब्द द्वितीया विभक्ति एक वचन का रूप है। इसलिए मकारान्त पद है।) यहां सूत्र लगा— **मोऽनुस्वारः**। यह सूत्र कहता है कि हल् अर्थात् व्यंजन वर्ण पर में हो तो मकारान्त पद अर्थात मकार हो जिसके अन्त में उस मकार के स्थान में अनुस्वार हो जाता है यहाँ मान्त पद है हरिम् का मकार उस मकार से परे वन्दे का हल् वर्ण वकार होने के कारण मकार के स्थान में अनुस्वार होकर हरिं वन्दे प्रयोग सिद्ध होता है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण देखे।

विग्रह	आदेश	सन्धि
मातरम् + वन्दे	मातरं + वन्दे	मातरं वन्दे
पितर्म् + वन्दे	पितरं + वन्दे	पितरं वन्दे
पुस्तकम् + पठति	पुस्तकं + पठति	पुस्तकं पठति
ग्रामम् + गच्छति	ग्रामं + गच्छति	ग्रामं गच्छति
गुरूम् + नमति	गुरूं + नमति	गुरूं नमति
विद्यालयम् + गच्छति	विद्यालयं + गच्छति	विद्यालयं गच्छति
शत्रुम् + जयति	शत्रुं + जयति	शत्रुं जयति
मधुरम् + हसति	मधुरं + हसति	मधुरं हसति

विशेष बात का ध्यान देना होगा कि पदान्त मकार के बाद यदि हल् वर्ण को छोड़कर स्वर वर्ण होगा तो वहां पर अनुस्वार नहीं होगा मकार ही रहेगा और अज्झीन्नं परेण संयोज्यम् अर्थात् स्वर से रहित वर्ण अगले वर्ण के साथ मिल जाता है।

यथा – सम् + आचारः	समाचार :
गुरूम् + अनुगच्छति	गुरूमनुगच्छति
विद्यालयम् + आगच्छति	विद्यालयमागच्छति
ग्रामम् + आगतः	ग्राममागतः

इसी प्रकार अन्य उदाहरण देखना चाहिए।

अनुस्वार विधायक विधि सूत्र

78. नश्चापदान्तस्य झलि 8।3। 25।।नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः। यशांसि । आक्रंस्यते। झलि किम् ? मन्यसे।

<u>अर्थ</u> :– झल् परे होने पर अपदान्त नकार मकार को अनुस्वार हो जाता है।
उदाहरण :<u>यशांसि</u> : यशान् + सि (यशांसि यह पुरा पद है केवल यशान् पद नहीं है।) यह सूत्र लगा–**नश्चापदान्तस्य झलि।** यह सूत्र कहता है कि झल् प्रत्याहार का वर्ण यदि पर में हो तो अपदान्त नकार मकार को अनुस्वार होता है। यहां झल् प्रत्याहार का वर्ण पर में है सि का सकार तथा पूर्व में अपदान्त नकार है यशान् का नकार। अतः उस नकार को अनुस्वार होकर यशां + सि बना। वर्ण सम्मेलन होकर यशांसि प्रयोग सिद्ध होता है।
<u>आक्रंस्यते</u> –आक्रम् + स्यते यहाँ पर भी अपदान्त मकार है। आक्रम् का मकार तथा पर में झल् प्रत्याहार का वर्ण है, स्यते का सकार । इसलिए **नश्चापदान्तस्य झलि** इस सूत्र के द्वारा मकार को अनुस्वार होकर आक्रं स्यते बना। तथा वर्ण सम्मेलन होकर आक्रंस्यते प्रयोग सिद्ध होता है।
प्र0. झलि किम् ? मन्यसे इस सूत्र में झलि का ग्रहण क्यों किया ?
<u>उत्तर</u> :– सूत्र में झलि का ग्रहण इसलिए किया गया कि मन् + यसे यहाँ पर अपदान्त नकार तो है पर झल् प्रत्याहार का वर्ण न होने से नकार के स्थान में अनुस्वार नहीं हुआ। यदि सूत्र में झलि नहीं कहे गये होते तो यहाँ पर न को अनुस्वार होकर मंयसे ऐसा अनिष्ट बनने लगता। मन् + यसे नकार को अनुस्वार न होने के कारण मन्यसे ऐसा प्रयोग बना। इसलिए अनिष्ट प्रयोग की निवृत्ति के लिए सूत्र में झलि का ग्रहण किया गया।
इस सूत्र के कुछ अन्य उदाहरण यथा –

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
नम् + स्यति	नं + स्यति	नंस्यति
पयान् + सि	पयां + सि	पयांसि
आयम् + स्यते	आयं + स्यते	आयंस्यते
अनम् + सीत्	अनं + सीत्	अनंसीत्
हन् + सि	हं + सि	हंसि
श्रेयान् + सि	श्रेयां + सि	श्रेयांसि

अनुस्वार पर सवर्ण सन्धि

पर सवर्ण विधायक विधि सूत्र

79 अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण 8।4।58।। स्पष्टम्। शान्तः।
अर्थ– यय् प्रत्याहार के परे होने अनुस्वार को पर सवर्ण होता है।

उदाहरण यथा –**शान्तः।** शाम् + तः यहां पर नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से अपदान्त मकार के स्थान पर अनुस्वार होकर शां + तः बना। अब इसके बाद सूत्र लगा– **अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः।** यह सूत्र कहता है कि यय् प्रत्याहार का वर्ण परे हो तो अनुस्वार को परसवर्ण होता है। यय् प्रत्याहार का वर्ण है पर में तः का तकार और पूर्व मे अनुस्वार शां। उस अनुस्वार के स्थान में पर वर्ण के सवर्ण प्राप्त हुए। अनुस्वार से परे है तः का तकार और तकार के सवर्णी है त् थ् द् ध् न् अनुस्वार के स्थान पर पांचों वर्ण प्राप्त हुए। अतः यह अनियम हुआ। इस अनियम को रोकने के लिए स्थानेऽन्तरतमः सूत्र आया और स्थान मिलाने पर स्थानी अनुस्वार का नासिका स्थान है और आदेश त् थ् द् ध् न में से नासिका स्थान वाला केवल न् है। अतः अनुस्वार के स्थान पर नकार आदेश होकर शान् + तः बना। वर्ण सम्मेलन होकर शान्तः प्रयोग सिद्ध हुआ।

इस सूत्र का कुछ अन्य उदाहरण :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
अन् + कितः	अङ + कितः	अङ्कितः
अन् + चित्	अम् + चित्	अञ्चित्
गम् + ता	गन् + ता	गन्ता
कुन् + ठितः	कुण् + ठितः	कुण्ठितः
दाम् + तः	दाम् + तः	दान्तः
भुन् + क्ते	भुङ + क्ते	भुङ्क्तेः
गुम् + फित	गुम् + फित	गुम्फितः

इसी प्रकार अन्य प्रयोग भी देखें।

वैकल्पिक परसवर्ण विधायक विधि सूत्र।

80. वा पदान्तस्य 8 । 4 । 59 ।(पदान्तस्यानुस्वारस्य ययि परे परसवर्णो वा स्यात्)।

त्वङ्करोषि । त्वं करोषि।

<u>अर्थ</u> :– यय् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो पदान्त अनुस्वार को विकल्प से पर सवर्ण होता है।

त्वङ्करोषि, त्वं करोषि। त्वम् + करोषि यहां पर पहले मोऽनुस्वारः सूत्र से त्वम् के मकार के स्थान पर अनुस्वार होकर त्वं + करोषि बना। उसके बाद सूत्र लगा – वा पदान्तस्य। यह सूत्र कहता है कि यय् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो पदान्त अनुस्वार को विकल्प से पर सवर्ण हो जाता है। यहाँ पर यय् प्रत्याहार का वर्ण पर में है। करोषि का ककार पूर्व में पदान्त अनुस्वार है। त्वं में उपर बिन्दु। उसको पर सवर्ण होता है पर में वर्ण है क उसका सवर्ण क् ख् ग् घ् ङ् ये पांचों वर्ण एक साथ प्राप्त हो रहे है यह अनियम हुआ। उस अनियम को रोकने के लिए स्थानेऽन्तरतमः सूत्र आया। स्थान की तुल्यता मिलाने पर अनुस्वार का नासिका स्थान है और नासिका स्थान वाला कवर्ग का वर्ण ङकार है। इसलिए अनुस्वार के स्थान में पर सवर्ण ङकार होकर <u>त्वङ् + करोषि</u> बना। वर्ण सम्मेलन होकर <u>त्वङकरोषि</u> प्रयोग सिद्ध होता है। पर सवर्ण विकल्प से होता है जब पर सवर्ण नहीं होगा उस पक्ष में <u>त्वं करोषि</u> ऐसा ही रहेगा। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी देखे :–

मकारादेश विधायक नियम सूत्र

81. मो राजि समः क्वौ 8 । 3 । 25।।

क्विबन्ते राज तौ परे समो मस्य म एव स्यात्। सम्राट्।

अर्थ :– क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु के परे होने पर सम् के मकार के स्थान पर मकार ही होता है।
राज् धातु से क्विप् प्रत्यय होकर और उस क्विप् प्रत्यय के सभी वर्णो का लोप हो जाता है। केवल राज् धातु ही बचता है। फिर भी वह क्विप् प्रत्ययान्त कहलाता है। इसका वर्ण हलन्त पुलिंग प्रकरण विशेष रूप से किया गया। क्विबन्त राज् धातु से परे होने पर भी सम् के मकार ही रह गया।
सम्राट सम् + राट्। यहाँ सूत्र लगा मोऽनुस्वारः। इसलिए इस सूत्र से मकार को अनुस्वार प्राप्त था उसको बाधकर सूत्र लगा– 'मो राजि समः क्वौ।' यह सूत्र कहता है कि क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु के परे होने पर सम् के मकार के स्थान पर मकार ही होता है। यहां पर क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु है। राट् (राज् धातु से क्विप् प्रत्यय तथा क्विप् का सर्वापहारी लोप होकर राज् शब्द बना। प्रथमा एक वचन विपक्षा में सु प्रत्यय होकर राज् सु बना। सु में उकार की इत्संज्ञा तथा लोप होकर राज् + स् बना। स् का लोप होकर राज् शब्द बना। जकार जश्त्व तथा चर्त्व होकर राट् शब्द बना) इसलिए सम् के मकार के स्थान परम ही होकर सम् + राट बना। वर्ण सम्मेलन होकर सम्राट् शब्द सिद्ध होता है। इस सूत्र का उदाहरण प्रायः कम प्राप्त होता है।

वैकल्पिक मकारादेश विधायक विधि सूत्र

82 हेमपरे वा 8 ।3 ।26 ।।

मपरे हकारे परे मस्य मो वा स्यात् । किम् ह्मलयति, किं ह्मलयति।

अर्थ :–म परक हकार के परे होने पर मकार के स्थान में मकार विकल्प से होता है।
उदाहरण यथा –किम् ह्मलयति, किं ह्मलयति। किम् + ह्मलयति यहां पर मोऽनुस्वारः से अनुस्वार प्राप्त था। उसको बाधकर सूत्र लगा हे मपरे वा। यह सूत्र कहता है कि जिस हकार के बाद मकार हो ऐसा हकार परे होने पर किम् के मकार के स्थान पर मकार आदेश होता है विकल्प से। यहाँ म परक हकार पर में है ह्मलयति का हकार। उस हकार के परे होने पर किम् के मकार के स्थान पर विकल्प से मकार आदेश होकर किम् ह्मलयति बना। जिस पक्ष में मकार आदेश नहीं होगा उस पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्मलयति प्रयोग सिद्ध होता है।
वार्तिक – यवल परे यवला वा। कियँ ह्यः किं ह्यः किवँ् लयति, किं ह्वलयति। किलँ् ह्लादयतिः किं ह्लादयति।
अर्थ :– यकार, वकार और लकार परक हकार के परे होने पर मकार के स्थान पर यँकार, वँकार और लंकार आदेश विकल्प से होते है।
हकार के बाद यकार हो या वकार हो अथवा लकार हो तो पूर्व में विद्यमान मकार के स्थान पर एक पक्ष में क्रमशः अनुनासिक यंकार, वकार लकार ही आदेश होते हैं विकल्प से। और एक पक्ष में अनुस्वार भी हो जायेगा।

कियँ ह्यः, किं ह्यः । किम् + ह्यः यहाँ पर मकार के स्थान पर मोऽनुस्वारः सूत्र से अनुस्वार प्राप्त था। उसको वाधकर वार्तिक लगा– यवल परे यवला वा। यह वार्तिक कहता है कि यकार, वकार और लकार परक हकार पर में होतो पूर्व में मकार के स्थान में विकल्प से यकार, वकार और लकार आदेश होते है। यहाँ पर यकार परक हकार पर में है। अतः किम् के मकार के स्थान पर अनुनासिक यकार हुआ। क्योंकि मकार भी अनुनासिक है। कियँ ह्यः प्रयोग सिद्ध हुआ। यकार के अभाव पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्यः प्रयोग सिद्ध होता है।
किवँ ह्वलयति किं ह्वलयति। किम् + ह्लादयति यह **मोऽनुस्वारः** सूत्र से मकार अनुस्वार प्राप्त था। उसको बाधकर 'यवल' परे यवला वा' इस वार्तिक के द्वारा लकार परक हकार परे होने के कारण कि के मकार के स्थान पर अनुनासिक वकार होकर

किवं ह्वलयति प्रयोग सिद्ध होता है और अभाव पक्ष में मकार को अनुस्वार होकर किं ह्वलयति प्रयोग सिद्ध होता हैं इसी प्रकार अन्य प्रयोग भी सिद्ध करें।

किलँ ह्लादयति किं ह्लादयति किम् + ह्लादयति यहाँ पर मोऽनुस्वारः सूत्र से किम् के मकार के स्थान पर अनुस्वार प्राप्त है। उसको बांधकर वार्तिक लगा– यवलपरे यवला वा इस वार्तिक के द्वारा लकार परक हकार परे होने के कारण किम् के मकार के स्थान में विकल्प से लँकार होकर किलँ ह्लादयति प्रयोग सिद्ध होता है। यह लकार आदेश विकल्प से होता है। जिस पक्ष में मकार के स्थान में लकार नहीं होगा उस पक्ष में मकार को अनुस्वार होकर किं ह्लादयति प्रयोग सिद्ध होता है।

वैकल्पिक नकारादेश विधायक विधि सूत्र

83 नपरे नः 8 । 3 । 27 ।।

नपरे हकारे मस्य नो वा। किन् ह्नुते किं ह्नुते।

अर्थ :– नपरक हकार परे होने पर मकार के स्थान पर नकार आदेश विकल्प से होता है। हकार के बाद में नकार हो ऐसा हकार पर में हो तो मकार के स्थान में नकारादेश होता है, विकल्प से। नकार न होने के पक्ष में मोऽनुस्वादः सूत्र से अनुस्वार हो जाता है। उदाहरण :–

किन् ह्नुते किं ह्नुते । किम् + ह्नुते यहां पर **मोऽनुस्वार** सूत्र से मकार के स्थान पर अनुस्वार प्राप्त था। उस अनुस्वार को बांधकर सूत्र लगा– नपरे नः। यह सूत्र कहता है कि न परक अर्थात् हकार पर में हो ऐसा हकार के पर में होने के कारण मकार के स्थान में विकल्प से नकारादेश होता है। यहां पर नकार परक हकार है। ह्नुते का हकार इसलिए किम् के मकार के स्थान में नकारादेश होकर किन् ह्नुते प्रयोग सिद्ध होता है। यह नकार आदेश विकल्प से होता है जिस पक्ष में नकार आदेश नहीं होगा, उस पक्ष में मकार को अनुस्वार होकर किं ह्नुते प्रयोग सिद्ध होता है। इस प्रकार दो रूप सिद्ध हुआ 1. किन् ह्नुते, 2. किं ह्नुते।

आगम सन्धि

आद्यन्तावयवविधायक परिभाषा सूत्र

84. आद्यन्तौ टकितौ 1 ।1 ।46 ।।

टित्कितौ यस्योक्तौ तस्य क्रमाद्यन्तावयवौ स्तः।

अर्थ :– टित् और कित् जिसको कहे गये है वे क्रमशः उसके आदि और अन्त के अवयव होते है।

आगम मित्रवत होता है। जिसको आगम होता है। उसके आदि या अन्त में बैठता है यह सूत्र निर्णय करता है कि जिस आगम में टकार की इत्संज्ञा हुई हो, वह टित् कहलाता है और जिस आगम में ककार की इत्संज्ञा हुई हो वह कित् कहलायेगा अर्थात् उसे कित् कहते है। यदि आगम् टित् होगा तो जिसको आगम हुआ है उसके आदि में जाकर बैठता है। यदि आगम कित् हो तो उसके अन्त में बैठता है। जिस प्रकार छेच सूत्र से हस्व को तुक् का आगम हुआ और तुक में हलन्त्यम् सूत्र से ककार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर तु बचा। तु में उकार की भी उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर त् मात्र बचता है अब यह प्रश्न होता है कि तकार कहाँ बैठे? क्योंकि छेच सूत्र से जो तुक् का आगम हुआ है वह छकार के परे रहते हस्व को होता है। ह्रस्व के स्थान पर तुक का आगम् होगा क्योंकि आगम मित्रवत होता है इसलिए ह्रस्व के आदि में बैठेगा, या अन्त में बैठेगा। तब इस सूत्र को लगाया गया। यह सूत्र कहता है कि टित् होगा तो आदि में बैठेगा और कित् होगा तो अन्त में बैठेगा। इसलिए यहाँ तुक् में कित् होने के कारण अन्त में बैठेगा। इसलिए अगले सूत्र में विशेष प्रकार से इसका वर्णन किया जायेगा।

किसी भी प्रत्यय और आदेश में जिस वर्ण की इत्संज्ञा की जाने वाली है वह अनुबन्ध कहलाता है। इत्संज्ञा योग्यत्वम् अनुबन्धत्वम्। आगम् आदि में लगे हुऐ वर्णो का हलन्त्यम् आदि सूत्रों से जो इत्संज्ञा करके तस्य लोपः से लोप किया जाता है। उसे अनुबन्ध लोप कहते है। इसलिए आगे जहाँ कही भी अनुबन्ध लोप की बात आ जाये तो यही समझना चाहिए कि प्रत्यय आगम आदि को टित्–कित् आदि बनाने के लिए अतिरिक्त वर्ण है वे अनुबन्ध है और उनका लोप होना ही अनुबन्ध लोप है। आगम् और आदेश में अन्तर – शत्रुवदादेशा भवन्ति। मित्रवद् आगमा भवन्ति। आदेश शत्रुवत होते है। जो किसी वर्ण को हटाकर बैठते है और आगम मित्र के समान होते है जो किसी वर्ण के पास आकर बैठते है।

कुक् टुक् आगम विधायक विधि सूत्र

85. ङणोः कुक् टुक् शरि। 8।3।28।।

वा स्तः !

अर्थ– शर् प्रत्याहार के परे होने पर ङकार णकार को क्रमशः कुक् और टुक् का आगम विकल्प से होताहै।

कुक् और टुक् में हलन्त्यम् सूत्र से दोनों ककारों का हलन्त्यम सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर कु + टु बचा। उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर क् ट् बचा। ककार की इत्संज्ञा होने के कारण ये दोनों कित् है और आगम है अतः ये आगम होने के कारण किसी के स्थान में नहीं होगें अपितु बगल में जाकर बैठता है यथा संख्य मनुदेशः समानाम के अनुसार यदि ङकार है तो कुक् का आगम होगा और णकार है तो टृक् का आगम होगा ये दोनों आगम् कित् है कित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ सूत्र के नियमानुसार ङकार और णकार के अन्त में जाकर बैठेंगे। उदाहरण यथा –

प्राङ + षष्ठः, सुगण् + षष्ठः यहां परे सूत्र लगा – **ङणोः कुक् टुक् शरि।** यह सूत्र कहता है कि शर् प्रत्याहार के परे होने पर ङकार को कुक् तथा णकार को टुक् का आगम होता है। यहाँ पर शर् (श ष स) प्रत्याहार का वर्ण है पर में षष्ठः का षकार और पूर्व में ङकार, णकार है प्राङ् का ङ् तथा सुगण् का ण्। अतः ङकार को कुक् तथा णकार को टुक् का आगम होकर और अनुबन्ध लोप होने के बाद क् तथा ट् मात्र बचा। अब कित् होने के कारण ङ तथा ण के अन्त में बैठता है। प्राङ् क् षष्ठः तथा सुगण् ट् + षष्ठः बना। आगम विकल्प से होता है जिस पक्ष में आगम नहीं होगा। उस पक्ष में प्राङ् + षष्ठः, सुगण् + षष्ठः बना।

अब इसके बाद अगला वार्तिक प्रवृत्त हो रहा है :–

वार्तिक :– चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् । प्राङ्ख् षष्ठः, प्राङक्षष्ठः, प्राङ् षष्ठः सुगण्ठ्षष्ठः, सुगण्ट षष्ठः, सुगषष्ठः

अर्थ :– शर् प्रत्याहार के परे होने पर चय् प्रत्याहार के स्थान पर उसी वर्ग का दूसरा वर्ण आदेश होता है। पुष्करसादि आचार्यो के मत में।

आनन्तर्य के कारण वर्ण प्रथम को उसी वर्ग का द्वितीय वर्ण हो जायेगा। भाव यह है कि श् ष् स् के परे होने पर क के स्थान में ख्, च् के स्थान में छ, ट के स्थान में ठ, त् के स्थान में थ्त् था प के स्थान में फ आदेश विकल्प से होते हैं। प्राङक् + षष्ठः, सुगणट् + षष्ठः जो बना है। अब इन दोनों स्थानों पर शर् प्रत्याहार का वर्ण षकार परे होने के कारण ककार और टकार को क्रमशः खकार और ठकार होकर प्राङख् षष्ठः, सुगणठ् षष्ठः बना। किन्तु यह वार्तिक वैकल्पिक है। जिस पक्ष में द्वितीय वर्ण नहीं होंगे उस पक्ष में प्राङक् षष्ठः रहा। अतः क + ष = क्ष होकर प्राङक्षष्ठः बना। और जिस पक्ष में कुक् टुक नहीं होगा उस पक्ष में प्राङ षष्ठः बना। सुगणट षष्ठः सुगण

षष्ठः प्रयोग सिद्ध हुआ। अतः इस प्रकार तीन–तीन रूप बने।

इन तीन रूपों को तालिका के माध्यम से देंखे–

कुक् पक्ष में (प्राङ्ख् षष्ठः। (पौष्करसादि के मत में) (पाङ्क्षष्ठः (जब द्वितीय वर्ण नहीं होगा तो क् + ष् = क्ष होता है) कुक् के अभाव पक्ष में – प्राङ षष्ठः बना। टुक् पक्ष में (सुगणठ् ष्ष्ठः (पौष्करसादि में मत में) (सुगणट् षष्ठः (जहाँ द्वितीय वर्ण नहीं होगा) टुक् के अभाव क्ष में सगुण् षष्ठः

इस सूत्र का अन्य उदाहरण देखे :–

विग्रह	आदेश	सन्धि
प्राङ + षष्ठः	प्राङ्ख् + षष्ठः	प्राङ्ख्षष्ठः
सुगण् + षष्ठः	सुगण्ठ् + षष्ठः	सुगण्ठ्षष्ठः
प्राङ +षु	प्राङख् + षु	प्राङ्ख्षु
गवाङ् + षु	गवाङ्ख + षु	गवाङ्खषु
तिर्यङ् + स्वपिति	तिर्यङख् + स्वपिति	तिर्यङखस्वपिति

इत्यादि समझना चाहिए।

वैकल्पिक धुडागम विधायक विधि सूत्र

86 .ङः सि धुट् 8। 3। 29।। डात्परस्य सस्य धुड् वा । षटत्सन्तः षट् सन्तः ।

अर्थ :– ड से परे सकार को विकल्प से ध्रुट् का आगम होता है। धुट् में टकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा तथा दोनों का तस्य लोपः से लोप होकर ध् मात्र शेष बचता है। इसको प्रकारान्तर से यह भी कह सकते है कि अनुबन्ध लोप हुआ। अब टकार की इत्संज्ञा होने के कारण यह टित् है। आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा से जिसको भी आगम होगा वह आदि में बैठेगा।

षट्सन्तः, षट् + सन्तः । षट् + सन्त : यहाँ झलां जशोऽन्ते सूत्र के द्वारा टकार के स्थान पर जश्त्व डकार होकर षड् + सन्तः प्रयोग बना। अब सूत्र लगा–**ङः सि धुट्।** यह सूत्र कहता है कि डकार से परे सकार को विकल्प से धुट् का आगम होता है। यहां पर डकार है षड् में ड् तथा सकार पर में है। सन्तः का स् । अतः धुट् का आगम होता है। अतः यहां टित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा सूत्र के द्वारा सन्त के स् के आदि में बैठेगा। षड् +धुट् + सन्तः बना। अनुबन्ध लोप होने के बाद षड् + ध् + सन्तः बना। **खरि च** सूत्र के द्वारा खर् प्रत्याहार का वर्ण सन्तः का सकार परे होने के कारण झल् प्रत्याहार का वर्ण ध के स्थान में चर्त्व तकार होकर षड् + त् + सन्तः बना। पुनः खरिच सूत्र के द्वारा षड् + त् + सन्तः में डकार के स्थान में चर्त्व टकार होकर षट् + त् + सन्तः बना। वर्ण सम्मेलन होकर षट्त्सन्तः प्रयोग सिद्ध होता है और जिस पक्ष में धुट् का आगम नहीं होगा उस पक्ष में षट् सन्तः प्रयोग सिद्ध होता है।

इसके अन्य उदाहरण :–

विग्रह	आदेश	सन्धि
लिट् + सु	लिट् + त् + सु	लिट्त्सु
षट् + सुखानि	षट् + त् + सुखानि	षट्त्सुखानि
षट् + सन्निकर्षाः	षट् + त् + सन्निकर्षाः	षट्त्सन्निकर्षाः
षट् + समस्याः	षट् + त् + समस्याः	षट्त्समस्याः
षट् + सन्ततयः	षट् + त + सन्ततयः	षटत्सन्ततयः

इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी समझे।

वैकल्पिक धुडागम विधायक विधि सूत्र

87. नश्च 8 । 3 । 30 ।।

नान्तात्परस्य सस्य धुड् वा। सन्त्सः, सन्सः।

अर्थ :– पदान्त नकार से परे सकार को विकल्प से धुट् का आगम होता है।

ङः सि धुट्, डकार से परे सकार को धुट् का आगम करता है और यह सूत्र नकार से परे सकार को धुट् का आगम करता है। इतना मात्र अन्तर है शेष सभी ङः सि धुट् के सामान हुआ है।

सन्त्सः सन्सः । सन् +सः यहाँ पर नश्च सूत्र से सन् के नकार से परे सः के सकार को धुट् का आगम होकर अनुबन्ध लोप होने के बाद ध् मात्र शेष बचता है। अतः उसके बाद टित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा सूत्र के द्वारा सकार के आदि मैं जाकर बैठा सन् ध् + सः बना। धकार को खरि च सूत्र के द्वारा धकार को चर्त्व होकर टकार होकर सन् + त् + सः बना। वर्ण सम्मेलन होकर सन्त्सः प्रयोग बनता है। धुट् का आगम विकल्प से होता है जिस पक्ष में धुट् का आगम नहीं होगा उस पक्ष में सन् + सः वर्ण सम्मेलन होकर सन्सः प्रयोग ही रह गया।

इस सूत्र का अन्य उदाहरण भी देखे :–

विग्रह	आदेश	सन्धि
आस्मिन् + समये	आस्मिन्+ त् + समये	आस्मिन्त्समये
भवान् + सखा	भवान् + त् + सखा	भवान्त्सखा
सन् + सः	सन् + त् + सः	सन्त्सः
पुमान् + स्त्रिया	पुमान् + त् + स्त्रिया	पुमान्त्स्त्रिया
पठन् + साख्यम्	पठन् + त् + सांख्यम्	पठन्त्सांख्यम्
सन् + साधु	सन् + त् + साधु	सन्त्साधु
धनवान् + सहोदरः	धनवान् + त् + सहोदरः	धनवान्त्सहोदरः
विद्वान् + सहते	विद्वान् + त् + सहते	विद्वान्त्सहते
गच्छन् + स्त्रिया	गच्छन् + त् + स्त्रिया	गच्छन्त्स्त्रिया
हसन् + सहते	हसन् + त् + सहते	हसन्त्सहते

अभ्यास प्रश्न 1.

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अनुस्वार विधायक विधि सूत्र क्या है?
2. अपदान्त मकार नकार को अनुस्वार कौन सूत्र करता है?
3. आक्रंस्यते का विग्रह क्या है?
4. शान्तः किस सूत्र का उदाहरण है?
5. किन्ह्नुते किस सूत्र का उदाहरण है?
6. षटत्सन्तः किस सूत्र का उदाहरण है?
7. षटत्सन्तः का विग्रह क्या है?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मोऽनुस्वारः इस सूत्र का उदाहरण है :–
   (क) हरि वन्द (ख) वाग्धरिः
   (ग) तच्छिवः (घ) तच्छ्लोकेन
2. नश्चापदान्तस्य झलि इस सूत्र का उदाहरण है :–
   (क) सन्षष्ठः (ख) सर्पिष्टमम्
   (ग) प्रश्नः (घ) यशांसि
3. यय् प्रत्याहार पर में हो तो अनुस्वार को होता है :–
   (क) पूर्वसवर्ण (ख) परसवर्ण (ग) अनुस्वार
   (घ) दीर्घ

4. यय् प्रत्याहार पर में हो तो पदान्त अनुस्वार को होता है :–
   (क) परसवर्ण (ख) पूर्वसवर्ण
   (ग) गुण (घ) दीर्घ

5. मोराजिसमः क्वौ इस सूत्र का उदाहरण है :–
   (क) सम्राट (ख) उपेन्द्रः
   (ग) रामश्शेते (घ) रामश्चिनोति

6. ङसि धुट् से होता है :–
   (क) धुट् का आगम (ख) कुक् का आगम
   (ग) नृट का आगम (घ) णुट् का आगम

7. डकार से परे सकार का अवयव को आगम होता है :–
   (क) कुक् (ख) टुक्
   (ग) धुट् (घ) णुट

8. शर् प्रत्याहार के परे होने पर ङकार को आगम होता है:–
   (क) कुक् (ख) नुट्
   (ग) जुट् (घ) धुट्

9. सन्त्सः किस सूत्र का उदाहरण है :–
   (क) ङःसि धुट् (ख) आद्गुणः
   (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) नश्च

2.4 सारांश

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप हल् सन्धि के विषय में भली–भांति परिचित होंगे। हल् सन्धि में अनेक सन्धियाँ है। उन सन्धियों में से कुछ सन्धियों का वर्णन इस इकाई में की गयी है। जैसे अनुस्वार सन्धि अनुस्वार पर सवर्ण सन्धि, अनुस्वार को वैकल्पिक परसवर्ण सन्धि, मकारादेश सन्धि, नकारादेश सन्धि, कुक्टुक् आगम सन्धि, धुडागम आदि सन्धियों का वर्णन मुख्यरूप से इस इकाई में किया गया है। इन संन्धियों को ज्ञान करना मुख्यरूप से आवश्यक है।

2.5 शब्दावली

शब्द	अर्थ
हरि वन्दे	हरि को प्रणाम करता हूँ।
यशांसि	बहुत यश
आक्रंस्यते	आक्रमण करेगा उपर चढ़ेगा
मन्यते	मानता है
शान्तः	
त्वण्डरोषि	तुम करते हो
सम्राट	चक्रवर्ती राजा
किम् ह्मलंयति	क्या चलता या हिलता है

कियँ ह्यः	कल क्या है
किवँ ह्वलयति	क्या हिलाता है
किलँ ह्लादयति	कौन वस्तु प्रशन्न करती है
किन् ह्नुते	क्या छिपाता है
प्राङ्ख षष्ठः	छठे प्राचीन
सुगण्ठ षष्ठः	छठे गणक (विद्वान)
षट्त्सन्तः	छः सज्जन
सन्त्सः	वह सज्जन

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1–

अति लघु उत्तरीय प्रश्न – 1– मोऽनुस्वारः 2– नश्चाऽपदान्तस्य झलि 3– आक्रम्+ स्यते 4– अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः 5– नपरे नः 6– ङःसिधुट् 7– षड्+ सन्तः

बहुविकल्पीय प्रश्न– 1– (क) 2– (घ) 3– (ख) 4– (क) 5– (क) 6– (क) 7– (ग) 8– (क) 9– (घ)

2. 7 सदर्भ ग्रन्थ सूची

1–ग्रन्थ नाम	**लेखक**	**प्रकाशक**
लघुसिद्धान्त कौमुदी	सुरेन्द्र शास्त्री	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी
2–वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी .	भट्टोजिदीक्षित	**प्रकाशक** शारदा निकेतन वी, कस्तुरवानगर सिगरा वाराणसी
3–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
महाभाष्यम्	पतंजलि	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

2. 8 उपयोगी पुस्तकें

1–ग्रन्थ नाम	**लेखक**	**प्रकाशक**
लघुसिद्धान्त कौमुदी	वरदराजाचार्य	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

2.9. निबन्धात्मक प्रश्न

1. नश्चापदान्तस्य झलि इस सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए ?

इकाई . 3 : व्याकरण, शितुक् से पदान्ताद्वा तक

इकाई की रूप रेखा

3.1 प्रस्तावना

व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित यह तीसरी इकाई है। इस इकाई की अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि हल् सन्धि कहाँ पर होती है? अतः इस इकाई में मुख्य रूप से हल् सन्धि के विषय में वर्णन किया गया है।

व्याकरण शास्त्र में हल् सन्धि का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक बताया गया है क्योंकि बिना सन्धि के ज्ञान के बिना शब्दों का ज्ञान सम्भव नहीं है। इसलिए शब्दों के सम्यग् रूप से ज्ञान के लिए सन्धि का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप हल् सन्धि के अनेक महत्वपूर्ण सन्धियों का ज्ञान करेंगे।

- शितुक् सूत्र से तुगागम के विषय में आप परिचित होंगे।
- ङमोह्रस्वांदचि, ङमुँण्नित्यम् इस सूत्र के विषय में आप परिचित होंगे।
- सुडागम के विषय में आप परिचित होंगे।
- विसर्ग के विषय में आप परिचित होंगे।
- विसर्ग को स् होता है इस विषय में आप परिचित होंगे।
- पदान्तादवा इस सूत्र के विषय में आप परिचित होंगे।

3.3 वैकल्पिक तुगागम् विधायक विधि सूत्र

88. शितुक् 8 । 3 । 31 ।। पदान्तस्य नस्य शे परे तुग्वा। सञ्छम्भूः, सञ्च्छम्भुः, सञ्च्शम्भुः, सञ्शम्भुः।

अर्थ :– शकार के परे होने पर पदान्त नकार को विकल्प से तुक् का आगम होता है।

ङः सि धुट् डकार से परे सकार को धुट् का आगम् होता है केवल अन्तर इतना ही है। शेष सभी विषय ङः सि धुट् की तरह ही होता है। टुक में ककार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा और उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इत्संज्ञा तथा दोनों का तस्य लोपः से लोप होकर त मात्र शेष बचता है। अतः कित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा सूत्र से अन्त में बैठता है। यहाँ पर शकार के परे रहते नकार को टुक् का आगम हो रहा है। फलतः नकार के अन्त में बैठता है। उदाहरण यथा सन् + शम्भुः यहां सूत्र लगा– शितुक् शकार परे होने पर पदान्त नकार को विकल्प से तुक् का आगम होता है। यहां पर शकर परे है शम्भूः का शकार और पूर्व में पदान्त नकार है सन् का नकार। उसको तुक् का आगम होकर तथा अनुबन्ध लोप होकर सन् + त् + शम्भूः बना। स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से तकार को श्चुत्व होकर सन् च् + शम्भूः बना। पुनः स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से नकार को श्चुत्व होकर सञ्च् + शम्भूः बना। अब शश्छोऽटि सूत्र से शकार को छकार होकर शञ्चछम्भुः बना। पुनः झरो झरि सवर्णे सूत्र से चकार को विकल्प से लोप होकर (1) सञछम्भूः बना। जहाँ चकार का लोप न हुआ वहाँ पर (2) सञ्च्छम्भुः बना। जहाँ छत्व नहीं हुआ वहाँ पर (3) सञ्च्शम्भुः और जहां तुक ही नहीं हुआ वहाँ पर श्चुत्व होकर (4) सञ्शम्भुः प्रयोग सिद्ध होता है। इस प्रकार चार प्रकार का रूप सिद्ध किया गया।इस सूत्र के अन्य उदाहरण भी समझे।

ङमुडागम विधायक विधि सूत्र

89. ङमो ह्रस्वांदचि ङमुण नित्यम् 8 । 3 । 32 ।।

ह्रस्वांत्परो यो ङम् तदन्तं यत्पदं तस्मात्परस्याचो ङमुट्।

प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण्णीशः, सन्नच्युतः।

अर्थ :– ह्रस्वं से परे जो ङम् वह अन्त में है जिसके ऐसा जो पद उससे परे अच् को नित्य से ङमुट् का आगम होता है।ङम् प्रत्याहार है, जिसमें ङ ण न ये तीन वर्ण आते है। ङमुट् में ङम् प्रत्याहार है। उकार उच्चारणार्थक है तथा ट् की हलन्त्यम सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होता है। ङम् प्रत्याहार का टित् का सम्बन्ध होकर ङुट्, णुट, नुट ये तीन आगम प्राप्त होंगे। यथासंख्यमनुदेश समानाम् सूत्र के अनुसार ङकारान्त पद से परे अच् को ङुट्, णकारान्त पद से परे अच् को णुट् तथा नकारान्त पद से परे अच् को नुट् का आगम होता है। उदाहरण यथा –

प्रत्यङ्ङात्मा । प्रत्यङ् + आत्मा यहां पर सूत्र लगा– ङमोह्रस्वांदचि ङ्मुण नित्यम्। यह सूत्र कहता है कि ह्रस्वं से परे जो ङम् वह अन्त में है। जिसके ऐसा जो पद उससे परे अच् को नित्य से ङमुट् का आगम होता है। यहां पर ह्रस्वं से परे ङम् प्रत्याहार का वर्ण है प्रत्यङ् में ङकार । उस ङकार से परे अच् प्रत्याहार का वर्ण है आत्मा का आकार उसको ङमुट् अर्थात् ङुट् का आगम होकर प्रत्यङ् + ङुट् + आत्मा बना। उसके बाद अनुबन्ध लोप होकर प्रत्यङ्+ङ्+ आत्मा बना। वर्ण सम्मेलन होकर प्रत्यङ्ङात्मा प्रयोग सिद्ध होता है।

सुगण्णीशः सुगण् + ईशः यहां सूत्र लगा– ङमोह्रस्वांदचि ङमुण् नित्यम्। यह सूत्र कहता है कि ह्रस्वं से परे जो ङम् प्रत्याहार का वर्ण वह अन्त में है। जिससे उससे परे अच् को नित्य ङमुट् का आगम होता है। यहाँ पर ह्रस्वं है सुगण् ग में अ उस ह्रस्वं के बाद ङम् प्रत्याहार का वर्ण है ण् वह पदान्त भी है और उससे परे अच् प्रत्याहार का वर्ण है ईशः का ई उस ई को णुट् का आगम होकर तथा अनुबन्ध लोप होकर ण् मात्र शेष बचता है। अतः सुगण् ण् + ईशः बना। वर्ण सम्मेलन होकर सुगण्णीशः प्रयोग सिद्ध होता है।

सन् + अच्युतः यहां पर ह्रस्वं वर्ण है सन् में स में अ, उस अकार से परे ङम् प्रत्याहार का वर्ण है न्/वह पदान्त भी है उस पदान्त नकार से परे अच् प्रत्याहार का वर्ण है अच्युतः का अकार। इस अकार को नुट् का आगम होकर तथा अनुबन्ध लोप होकर न् मात्र बचता है। अतः सन् + न् + अच्युतः बना। वर्ण सम्मेलन होकर सन्नच्युतः प्रयोग सिद्ध होता है।

इस सूत्र के कुछ अन्य उदाहण :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
प्रत्यङ् + आत्मा	प्रत्यङ् + ङ् + आत्मा	प्रत्यङ्ङात्मा
सुगण् + ईशः	सुगण् + ण् + ईशः	सुगण्णीशः
सन् + अच्युत	सन् + न् + अच्युत	सन्नच्युतः
कुर्वन् + आस्ते	कुर्वन् + न् + आस्ते	कुर्वन्नास्ते
तिङ् + अतिङः	तिङ् + ङ् + अतिङः	तिङ्ङतिङः
तस्मिन् + इति	तस्मिन् + न् + इति	तस्मिन्निति
जानन् + अपि	जानन् + न् + अपि	जानन्नपि
आस्मिन् + उद्याने	अस्मिन् + न् + उद्याने	अस्मिन्नुद्याने
गच्छन् + अवदत्	गच्छन् + न् + अवदत्	गच्छन्नवदत्
पठन् + अगच्छत्	पठन् + न् + अगच्छत्	पठन्नगच्छत्
गच्छन् + अवोचत्	गच्छन् + न् + अवोचत्	गच्छन्नवोचत्
सुगण् + आलयः	सुगण् + ण् + आलयः	सुगण्णालयः
सुगण् + अवदत्	सुगण् + ण् + अवदत्	युगण्णवदत्

रूत्व विधायक विधि सूत्र

90. समः सुटि 8 ।3 ।5 । समोरूः सुटि।

<u>अर्थ</u> :– सुट् पर में होने पर सम् के मकार के स्थान पर रू आदेश होता है।
सम् + स्कर्ता (सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से तृच प्रत्यय होकर सम् + कृ + तृच बना। चकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा लोप होकर तृ बचा। गुण अनङ आदि होकर कर्त्ता बना। सम् + कर्त्ता। सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे इस सूत्र से कृ के सुट् का आगम होकर तथा अनुबन्ध लोप होकर सम् स् + कर्त्ता बना। वर्ण सम्मेलन होकर सम् स्कर्त्ता बना) अब यहाँ सूत्र लगा–समः सुटि। यह सूत्र कहता है कि सम् के मकार को रू होता है सुटि पर में हो तो यहां पर सुट् प्रत्यय पर में स्कर्ता का स् इसलिए सम के मकार के स्थान में रू होकर सरु + स्कर्ता बना। उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर सर् + स्कर्ता बना। अब इसके बाद अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है –

अनुनासिक आदेश विधायक विधि सूत्र

91 अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा 8 । 3 । 2 ।।
अत्र रू प्रकरणे रोः पूर्वस्याऽनुनासिको वा स्यात् ।

<u>अर्थ</u> :– इस रू प्रकरण में रू से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होता है।
सर् + स्कर्ता यहां सूत्र लगा–अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा। यह सूत्र कहता है कि इस र् प्रकरण में र् से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होता है। यहाँ पर र् प्रकरण है सर् में र् उस र् से पूर्व वर्ण है सकार में अकार, उस अकार को विकल्प से अनुनासिक होकर सँर् + स्कर्ता बना। अब जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होगा, उस पक्ष में अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है –

अनुस्वारागम विधायक विधि सूत्र

92 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8 । 3 । 4 ।।
अनुनासिकं विहाय रोः पूर्वस्मात् परोऽनुस्वारागमः स्यात्।

<u>अर्थ</u> :– जहाँ अनुनासिक होता है उस रूप को छोड़कर अन्य पक्ष वाले रूप में रू से पूर्व जो वर्ण उससे परे अनुस्वार का आगम होता है।

<u>सर् + स्कर्ता</u> :– यहां सूत्र लगा – अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः।यह सूत्र कहता है कि अनुनासिक को छोड़कर अन्य पक्ष वाले रूप में र् से पूर्ण जो वर्ण उसको अनुस्वार होता है। यहाँ पर सर् + स्कर्ता में अनुनासिक से रहित रूप है सर् में र् उस र् से पूर्व वर्ण स में अ को अनुस्वार का आगम होकर संर् + स्कर्ता बना। (1) अनुनासिक पक्ष में सर् + स्कर्ता बना। तथा अनुस्वार पक्ष में सर् + स्कर्ता बना। अब दोनों पक्षों में अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है :–

विसर्ग विधायक विधि सूत्र

93. खरवसानयोर्विसर्जनीयः 9। 3 । 15 ।।
खरि अवसाने च पदान्तस्य रेफस्य विसर्गः।।

अर्थ :– खर् प्रत्याहार और अवसान परे रहने पर पदान्त रेफ को विसर्ग होता है।सँर + स्कर्ता, संर् + स्कर्ता यहाँ पर सूत्र लगा– खरवसानयो र्विसर्जनीयः। यह सूत्र कहता है कि खरि या अवसान परे हो तो रेफ को विसर्ग होता है यहाँ पर खर् प्रत्याहार वाला वर्ण पर में है स्कर्ता में स् पदान्त रेफ है यहाँ पर सर् में र् उसको विसर्ग होकर सँः स्कर्ता, सँः + स्कर्ता बना। अब यहाँ विसर्ग को सकार करने'' के लिए अगला वार्तिक प्रवृत्त होता है–
<u>**वार्तिक** = 95</u> सम्पूङ्कानां सो वक्तव्यः।। सँस्स्कर्ता, संस्स्कर्ता

अर्थ :– सम्, पुम्, कान् शब्दों के विसर्ग को सकार आदेश होता है।सँर + स्कर्ता, सर् + स्कर्ता यहाँ पर वार्तिक लगा– सम्पुङ्कानां सो वक्तव्यः। यह वार्तिक कहता है कि सम्, पुम् तथा कान् शब्दों के विसर्ग के स्थान पर सकार होता है। यहाँ पर सम् के स्थान पर विसर्ग हुआ है उस विसर्ग के स्थान पर स् होकर सँस् + स्कर्ता, संस् + स्कर्ता बना। वर्ण सम्मेलन होकर सँस्स्कर्ता बना। अनुनासिक अभाव पक्ष में अनुस्वार होकर संस्स्कर्ता प्रयोग सिद्ध होता है। अतः 1– सँस्सकर्ता 2–संस्स्कर्ता ये दो रूप सिद्ध हुए।

रूत्व विधायक विधि सूत्र

94 पुमः खय्यम्परे 8 । 3 । 6 ।।

अम्परे खयि पुमो रूँः स्यात् । पुॅस्कोकिलः पुँस्कोकिलः ।

अर्थ :– अम् प्रत्याहार परक खय् प्रत्याहार पर में हो तो पुम् के मकार को रू आदेश होता है। अम् और खय् दोनों प्रत्याहार है। अम् प्रत्याहार में अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ भ ङ ण न ये उन्नीस वर्ण आते है और खय् प्रत्याहार में वर्ग के द्वितीय और प्रथम अक्षर आते है। अर्थात् ख फ छ ठ थ च ट त क प ये दश वर्ण खय प्रत्याहार में आते है। खय् प्रत्याहार के बाद अम् प्रत्याहार परे हो तो और खय् प्रत्याहार से पूर्व पुम् का मकार हो तो उस मकार को रू आदेश होता है।

पुम् + कोकिल : यहाँ सूत्र लगा– पुमः खय्यम्परे। यह सूत्र कहता है कि अम् परक खय् प्रत्याहार पर में हो तो पुम् के मकार के स्थान में रू आदेश ही होता है। यहां पर अम् प्रत्याहार है कोकिलः में क में ओ तथा खय् प्रत्याहार का वर्ण है कोकिलः में को में क । उससे पूर्व वर्ण है पुम् का मकार इस मकार के स्थान में रू आदेश होकर पुरू + कोकिलः बना। रू में उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से उकार की इत्संज्ञा तथा तस्यः लोपः से लोप होकर पुर + कोकिलः बना। इसके बाद अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा इस सूत्र से रू से पूर्व में जो अकार है उस अकार के बाद अनुनासिक का आगम होकर पुँर् + कोकिलः बना। यह अनुनासिक विकल्प से होता है जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होगा उस पक्ष में अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः इस सूत्र अनुस्वार का आगम् होकर पुंर् + कोकिलः बना। उसके बाद खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से रकार को विसर्ग होकर पुँः + कोकिलः, पुं : + कोकिलः ये दो रूप बने। उसके बाद में सम्पुङकाना सो वक्तव्यः इस वार्तिक के द्वारा विसर्ग को सकार होकर पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः ये रूप सिद्ध हुए। इस प्रयोग को ज्ञान करने के लिए सँस्कर्ता प्रयोग को अच्छी तरह से अध्ययन करें।

रूत्व विधायक विधि सूत्र

95 नश्छव्य प्रशान् 8 । 3 । 7 ।।

अम्परे छवि नान्तस्य पदस्य रूः, न तु प्रशान् – शब्दस्य।

अर्थः–अम् परक छव् प्रत्याहार के परे होने पर नकारान्त पद को रू आदेश होता है। किन्तु प्रशान् शब्द के नकार को छोड़कर। अर्थात् प्रशान् शब्द के नकार को रू नहीं होगा। छव् प्रत्याहार में छ् ठ् थ् च् ट् त् ये छः वर्ण आते है। सम्पूर्ण नकारान्त शब्द को रु आदेश प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में अलोऽन्त्यस्य सूत्र के द्वारा अन्तिम वर्ण नकार के स्थान में रू होता है। उदाहरण यथा –

चक्रिन् + त्रायस्व (यहाँ पर चक्रिन् यह नान्त पद है) यहां सूत्र लगा– नश्छव्य प्रशान्। यह सूत्र कहता है कि छव् प्रत्याहार के बाद अम् प्रत्याहार हो, उस छव् प्रत्याहार से पूर्व नान्त पद हो तो नकार के स्थान में रू आदेश होता है यहां पर नान्त पद का वर्ण है

चक्रिन् में नकार। उस नकार से परे छव् प्रत्याहार का वर्ण है त्रायस्व का त्। उस तकार से परे अम् प्रत्याहार का वर्ण है त्रकार में र। इसलिए नकार के स्थान में रू होकर चक्रिरु + त्रायस्वः बना। रु में उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर चक्रिर् + त्रायस्व बना।

अब इसके बाद सूत्र लगा–'अत्रानुनासिकः पूर्वस्यः तु वा ' इस सूत्र चक्रिर् में र से पूर्व इ के बाद अनुनासिक का आगम होकर चक्रिँर् + त्रायस्व बना। जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होगा उस पक्ष में अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः इस सूत्र के द्वारा आगम होकर चक्रिँर + त्रयास्वः बना। इसके बाद खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से चक्रिँर् के स्थान में विसर्ग होकर चक्रिँ : त्रायस्वः और अनुस्वार पक्ष में चक्रिंः त्रायस्वः रूप बने। अब विसर्ग को सकार आदेष करने वाला अगला सूत्र प्रयोग किया जाता है :–

सकारादेश विधायक विधि सूत्र

96. विसर्जनीयस्य सः 8 । 3 । 34 ।।

खरि विसर्जनीयस्य सः स्यात् । चक्रिंस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व अप्रषासन किम् ? प्रषान् तनोति। पदस्येति किम्? हन्ति।

अर्थ :– खर् प्रत्याहार के परे होने पर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेष होता है।
खर् प्रत्याहार में ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स ये तेरह वर्ण आते हैं ये वर्ण जिसके बाद में हो तो पूर्व में जो विसर्ग है उसके के स्थान में सकार आदेश होता है।
चूक्रिँः + त्रायस्व, चुकिः + त्रायस्व यहां पर खर् प्रत्याहार का वर्ण पर में है त्रायस्व का तकार उसमें पूर्व वर्ण विसर्ग के स्थान में विसर्जनीयस्य सः सूत्र से स् आदेश होकर चक्रिँस्त्रायस्व, अनुस्वार पक्ष में चक्रिँस्त्रायस्व ये दो रूप सिद्ध किये गये।

अप्रशान् किम् ? प्रशान् करोति। अब यहां प्रश्न करते है कि नश्छव्यप्रशान् सूत्र में अप्रशान क्यों कहा? उत्तर देते है कि प्रशान् तनोति में दोष न आवे, इसलिए। क्योंकि अप्रशान् कहकर प्रशान् शब्द को निषेध नहीं करेंगे तो प्रशान् + तनोति में भी नकार को रूत्व होकर प्रशाँस्तनोति ऐसा अनिष्टरूप बनने लगता है। इस अनिष्ट रूप के निवारण के लिए सूत्र में प्रशान् शब्द के रूत्व को निषेध किया गया हैं।

पदस्येति किम् ? हन्ति। अब प्रश्न करते है कि नश्छव्यःप्रशान् सूत्र में पदस्यं शब्द क्यों पढ़ा गया? उत्तर देते है कि हन्ति में दोष न आवे, इसलिए। क्योंकि पदस्य कहने से पदान्त दोनों नकार को ही रूत्व करता है। अपदान्त को नहीं। यदि पदस्य की अनवृत्ति नहीं करेंगे तो यह सूत्र पदान्त या अपदान्त दोनों नकारों मे रुत्व होने लगेगा, जिससे हन् + ति यहां पर अपदान्त नकार को भी रुत्व होकर हँस्ति ऐसा अनिष्ट रूप बनने लगेगा। इस अनिष्ट रूप के निवारण के लिए सूत्र में पदान्तस्य यह पद पढ़ा गया है।

वैकल्पिक रुत्व विधायक विधि सूत्र

97. नृन् पे 8। 3। 10।।

नृनित्यस्य रुर्वा पे।

<u>अर्थ</u> :– पकार के परे होने पर नृन् शब्द के नकार के स्थान पर विकल्प करके रू आदेश होता है। अलोऽन्त्यस्य सूत्र के द्वारा अन्तिम वर्ण नकार के स्थान पर ही रू आदेश होगा। उदाहरण यथा –
<u>नृन् + पाहि</u> । यहां पर सूत्र लगा–नृन् पे। यह सूत्र कहता है कि पकार के परे होने

पर नृन के नकार के स्थान पर रु आदेश होता है यहां पर पकार पर में है पाहि का पकार पूर्व में नकार है नृन् का नकार इस नकार के स्थान पर रू आदेश होकर नृ रु + पाहि बना। रु में उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोप होकर, नृ र् पाहि बना। अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा इस सूत्र से पूर्व अननुासिक होकर नँृ रु के र् + पाहि बना। अनुनासिक विकल्प से होता है जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होगा, उस पक्ष में अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः इस सूत्र से अनुस्वार का आगम होकर नृंर + पाहि बना। उसके बाद र् कार को खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से विसर्ग होकर नँृः+पाहि, नृंः + पाहि बना। अब यहां विसर्जनीयस्य सः से विसर्ग के स्थान पर सकार प्राप्त था। उसको बांधकर अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है–

जिह्वामूलीयोपध्मानीय विधायक विधि सूत्र

98 कुप्वोः = क = पौ च 8। 3 । 37 ।।
क वर्गे पवर्गे च परे विसर्गस्य = पौ स्तः। चाद् विसर्गः।
नँृ = पाहि, नँृ : पाहि, नृं = पाहि, नृं : पाहि, नृन्पाहि।

<u>**अर्थ**</u> :– कवर्ग पवर्ग परे होने पर विसर्ग को क्रमशः जिह्वाम्लीय तथा उपध्मानीय आदेश होते है। सूत्र में चकार पद ग्रहण से पक्ष विसर्ग भी होता है।

नँृः + पाहि, नृंः : पाहि। इस स्थिति में सूत्र लगा – कुप्वोः = क = पौ च इस सूत्र के द्वारा पकार परे होने से विसर्गे को उपध्मानीय होकर = पाहि, नृं = पाहि। विसर्ग पक्ष में नँृ : पाहि, नृंः पाहि बना। और जिस पक्ष में नृन् पे सूत्र से विसर्ग नहीं होगा, उस पक्ष में नृन्पाहि इस प्रकार कुल मिलाकर पांच रूप सिद्ध किये गये।

आम्रेडित संज्ञा विधायक संज्ञा सूत्र

99 तस्य परमाम्रेडितम् 8 । 1 । 2 ।। द्विरुक्तस्य परमाम्रेडितं स्यात् ।

अर्थ :– एक ही शब्द जो दो बार कहा गया है उसमें पर अर्थात् दूसरा शब्द आम्रेडित संज्ञक होता है। वैसे उच्चारण से हो या द्वित्व करके हो, एक ही शब्द का यदि दो बार उच्चारण या लेखन किया गया हो तो, दूसरा जो शब्द है उसकी इस सूत्र से आम्रेडित संज्ञा करता है। उदाहरण यथा –

किम् शब्द के द्वितीया विभक्ति बहुवचन विवक्षा में कान् शब्द बनता है। उसका कान् पद को नित्यविप्सयोः सूत्र से द्वित्व होकर कान् कान् बना। अब यहां एक ही शब्द दो बार कहा गया है। उसमें पर अर्थात् दूसरा जो कान शब्द है उसकी आम्रेडित संज्ञा नाम पड़ गया। आम्रेडित संज्ञा होने का फल क्या है उसका वर्णन सूत्र में करेंगे।

रुत्व विधायक विधि सूत्र

100 कानाम्रेडिते 8 । 3 । 12 ।।
कान्नकारस्य रुः स्यादाम्रेडिते । कँास्कान्, कांस्कान् ।

अर्थ :– आम्रेडित परे होने पर कान् शब्द के नकार को रु होता है।
कान् + कान् यहां पर सूत्र लगा – कानाम्रेडिते। यह सूत्र कहता है कि आम्रेडित के परे होने पर कान् शब्द के नकार को रू आदेश होता है। यहाँ पर आम्रेडित शब्द पर में है दूसरा कान्। उसके पूर्व में पहला कान् जो शब्द है उस कान शब्द के नकार के स्थान पर रु आदेश होकर कारु + कान् ऐसा बना। उसके उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस

सूत्र से रु में उकार इत की संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप हाकर कार् + कान् बना। उसके बाद र् से पूर्व और आकार से परे अनुनासिक होकर काँर् + कान् बना। उसके बाद अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः इस सूत्र से अनुनासिक को छोड़कर अनुस्वारः का आगम होकर कांर् + कान् बना। उसके बाद खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से रकार के स्थान पर विसर्ग होकर कँाः + कान्, कांः + कान् बना। उसके बाद जिह्वामूलीय प्राप्त था उसको बांधकर सम्पुकानां सो वक्तव्यः इस वार्तिक के द्वारा विसर्ग के स्थान पर सकार होकर कँास् + कान्, कांस् + कान् बना। उसके बाद वर्ण सम्मेलन होकर कँास्कान्, कांस्कान् ये दो रूप सिद्ध होते है :–

तुगागम विधायक विधि सूत्र

101 छे च 8 । 3 । 12 ।।

ह्रस्वस्य छे परे तुक्। शिवच्छाया।

<u>अर्थ</u> :– छकार परे हो तो ह्रस्व को तुक् का आगम होता है।शिव + छाया । शिवस्य छाया इति विग्रह, ऐसा षष्ठी तत्पुरूष समास हुआ है। यहां सूत्र लगा – छेच। यह सूत्र कहता है कि छकार परे होने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है। यहाँ पर ह्रस्व है शिव में वकार में अकार इस अकार से छ पर में है। छाया का छकार । इसलिए अकार के स्थान तुक् का आगम होता है अब यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि तुक् का आगम कहाँ पर होगा? तुक् में ककार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा तथा दोनों का तस्य लोपः से लोप होकर 'त्' मात्र बचता है। आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा सूत्र के अनुसार कित् होने के कारण हस्व अकार के बाद ही बैठेगा। ह्रस्व अकार है शिव में वकार में अकार के बाद अ के बैठकर शिव + त् + छाया बना। (आगम कहाँ होता इसका विशेष वर्णन आद्यन्तौ टकितौ सूत्र में किया गया है) उसके बाद 'स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से तकार के स्थान पर श्चुत्व होकर शिव + च् + छाया बना। वर्ण सम्मेलन होकर शिवच्छाया प्रयोग सिद्ध होता है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण देखे।

वैकल्पिक तुगागम विधि विधायक सूत्र

102 पदान्ता द्वा । 6 । 1 । 56 ।।

दीर्घात् पदान्ताच्छे परे तुग् वा। लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मी छाया।

अर्थ :– पदान्त दीर्घ से छकार परे होने पर दीर्घ को तुक् का आगम होता है विकल्प से।

लक्ष्मी + छाया । यहाँ पर (लक्ष्म्याः छाया इति विग्रहः, षष्ठी तत्पुरूष समासः) सूत्र लगा–पदान्ताद्वा। यह सूत्र कहता है कि पदान्त दीर्घ से छकार का वर्ण बाद में हो तो दीर्घ को तुक् का आगम होता है। यहाँ पर पदान्त दीर्घ है। लक्ष्मी में मी में ईकार है। उसे ई को तुक् का आगम होता है। क्योंकि छकार पर में है छाया का छ। तुक् में क् का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से सूत्र से इत्संज्ञा तथा दोनों का तस्य लोपः से लोप होकर 'त्' मात्र बचता है। अब इस त् को कहाँ पर रखा जाय? इस शंका को निवारण करने के लिए आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा सूत्र के द्वारा कित् होने के कारण। पदान्त दीर्घ लक्ष्मी में मकार में ईकार के बाद रखा जायेगा। यह तुक् अन्त में बैठकर लक्ष्मीतुक् + छाया बना। उसके बाद स्तोः श्चुना श्चुः इस सूत्र के द्वारा तकार के स्थान पर श्चुत्व चकार होकर लक्ष्मी च् + छाया बना। उसके बाद वर्ण सम्मेलन होकर लक्ष्मीच्छाया प्रयोग सिद्ध होता है। तुक् का आगम इस सूत्र के द्वारा विकल्प से होता है। जिस पक्ष में तुक् का आगम नहीं होगा। उस पक्ष में लक्ष्मीछाया ज्यौ का त्यौ रहा। इस प्रकार दो रूप सिद्ध किये गये। (1) लक्ष्मीच्छाया,

तुक् पक्ष में (2) तुक् अभाव पक्ष में लक्ष्मीछाया ही रहेगा। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी देखे :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
लक्ष्मी + छाया	लक्ष्मी + च् + छाया	लक्ष्मीच्छाया
शोध + छात्रः	शोध + च् + छात्रः	शोधच्छात्रः
इ + छति	इ + च् + छति	इच्छति
द्यूत + छलेन	द्यूत + च + छलेन	धूतच्छलेन
दन्त + छदः	दन्त + च + छदः	दन्तच्छदः
वेद + छन्दः	वेद + च् + छन्दः	वेदच्छन्दः
पद + छेदः	पद + च् + छेदः	पदच्छेदः
ग + छति	ग + च् + छति	गच्छति
मंगल + छाया	मंगल + च् + छाया	मंगलच्छाया
नूतन + छात्रः	नूतन + च् + छात्रः	नूतनच्छात्रः
चि + छेद	चि + च् + छेद	चिच्छेद
चित्र + छाया	चित्र + च् + छाया	चित्रच्छाया
यज्ञ + छागः	यज्ञ + च् + छागः	यज्ञच्छायाः
स्व + छन्दः	स्व + च् + छन्दः	स्वच्छन्दः
असि + छिन्नः	असि + च् + छिन्न	असिच्छिन्नः
नव + छिद्राणि	नव + च् + चिद्राणि	नवच्छिद्राणि
प + छति	प + च् + छति	पच्छति
वि + छेदः	वि + च् + छेदः	विच्छेदः
मम + छात्र	मम च् + छात्रः	ममच्छात्रः
तव + छात्र	तव + च् + छात्रः	तवच्छात्रः
गुच्छ + छेदः	गुच्छ + च् + छेदः	गुच्छच्छेदः
वैदिक् + छन्दांति	वैदिक + च् + छन्दांति	वैदिकच्छन्दांति
भूपति + छाया	भूपति + च् + छाया	भूपतिच्छाया
मधु + छन्दस्	मधु + च् + छन्दस	मधुच्छन्दस्
मूषक + छेद	मूषक + च् + छेद	मूषकच्छेद
आ + छिद्यते	आ + च् + छिद्यते	आच्छिद्यते
कुमारी + छेत्स्यति	कुमारी च् + छेत्स्यति	कुमारीच्छेत्स्यति
शीतला + छाया	शीतला + च् + छाया	शीतलाच्छाया
नो + छेदः	नो + च् : छेदः	नोच्छेदः
मा + छित्वा	मा + च् + छित्वा	माच्छित्वा
काले + छिद्यते	काले + च् + छिद्यते	कालेच्छिद्यते
मा + छिदः	मा + च् + छिदः	माच्छिदः
कुटी + छन्ना	कुटी + च् + छन्ना	कुटीच्छन्ना
गुढ़ा + छेकोक्तिः	गुढ़ा + च् + छेकोक्तिः	गुढ़ाच्छेकोक्तिः

इसी प्रकार अन्य उदाहरण समझना चाहिए।

इति हल सन्धि प्रकरणम्

यहां हलो की सन्धि प्रकरण समाप्त होता है। सन्धि एक प्रकार का वर्ण विकार हे। यदि वह विकार अच् के स्थान पर हो तो अच् सन्धि कहते है। इसी प्रकार विसर्ग के स्थान पर सन्धि हो तो विसर्ग सन्धि कहते है। इस प्रकार अब हल् सन्धि समाप्त हुआ। अब

इसके बाद विसर्ग सन्धि का अध्ययन करेंगे। किन्तु एक बात का विशेश ध्यान देना होगा कि जब तक हल् सन्धि का ज्ञान अच्छी प्रकार से नहीं होगा तो विसर्ग सन्धि समझ नहीं आयेगा। इसलिए हल् सन्धि का ज्ञान आवश्यक है।

अभ्यास प्रश्न 1

अतिलघु–उत्तरीय

1. शञ्छम्भूः किस सूत्र का उदाहरण है ?
2. शितुक सूत्र क्या करता है?
3. प्रत्यङ्ङात्मा किस सूत्र का उदाहरण है?
4. सुगण्णीशः का विग्रह क्या होगा?
5. सुन्नच्युतः का विग्रह क्या है?
6. अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः सूत्र क्या करता है?
7. सम्पुङकानां सो वक्तव्यः क्या करता है?
8. पुँस्कोकिल किस सूत्र का उदाहरण है?
9. चक्रिँस्त्रायस्व किस सूत्र का उदाहरण है?
11. शिवच्छाया किस सूत्र का उदाहरण है?
12. लक्ष्मीच्छाया किस सूत्र का उदाहरण है?

अभ्यास प्रश्न 2

बहुविकल्पात्मक

1. शकार परे होने पर पदान्त नकार को आगम होता है :–
   (क) तुक् (ख) टुक् (ग) धुट् (घ) सुट्
2. ङःमोह्रस्वांदचि ङमुण्नित्यम् से होता है :–
   (क) सुट् (ख) ङमुट (ग) धुट् (घ) नुट्
3. ह्रस्वं से परे जो ङम् उससे परे अच् को नित्य आगम होता है :–
   (क) ङमुट (ख) नुक् (ग) जुट्(घ) धुट्
4. सुट् परे होने पर सम् के मकार को होता है :–

(क) न् को रू (ख) सम् के म को रू (ग) स् को रू (घ) पुम के मकार को रू

5. रू प्रकरण में रू से पूर्व वर्ण को विकल्प से होता है :–
   (क) अनुनासिक (ख) सुडागम (ग) धुडागम (घ) नुडागम

6. खर् और अवसान पर में हो तो पदान्त रेफ के स्थान पर होता है –
   (क) अनुनासिक (ख) अनुस्वार (ग) विसर्ग (घ) सुडागम

7. अम् प्रत्याहार जिससे परे है ऐसा यदि खय परे हो तो पुम शब्द के मकार को होता है –
   (क) रू (ख) अनुनासिक (ग) अनुस्वार (घ) नुडागम

8. खर् प्रत्याहार के परे होने पर विसर्ग के स्थान पर होता है :–
   (क) र् (ख) न् (ग) स् (घ) ह्

9. एक ही शब्द को दो बार कहे गये पहल को कहते है :–

(क) सार्वधातुक (ख) सर्वनामस्थान (ग) आम्रेडित (घ) अपृक्त

10. छकार के परे होने पर ह्रस्वं अवयव का आगम होता है :–
(क) तुक् (ख) नुक् (ग) धुट् (घ) णुट्

3.4 सारांश

इस इकाई के पढ़ने के पश्चात् आप हल् सन्धि के विषय में भली–भांति परिचित होंगे। हल् सन्धि में अनेक सन्धियाँ है। उन सन्धियों में से कुछ सन्धियों का वर्णन इस इकाई में की गयी है। जैसे शितुँक् सूत्र से तुँक् का आगम कहाँ होता है। इसका वर्णन भाली भांति की गयी है। इसी प्रकार ङमुडागम्, सुडागम, मकार को रू आदेश, रू को अनुनासिक, अनुस्वार, र को विसर्ग सम्, पुम् तथा कान् के स्थान में विसर्ग को स् आदेश नकार को रू, विसर्ग को स् आग्रेडित संज्ञा कान् के नकार को रू आदेश तुगाम् ये आगम तथा आदेश अनेक प्रकार के शब्द इस इकाई में पढ़े गये है।

3.5 शब्दावली

अर्थ	
जीवात्मा	
अच्छा गणितज्ञ	
सन्नच्युतः	अच्युत भगवान सत्स्वरूप है।
सँस्कर्ता	
पुँस्कोकिलः	नर कोयल
चक्रिँस्त्रायस्व	हे चक्रधारी ? तुम रक्षा करो
हन्ति	मारता है
नॄँ = पाहि	हे राजन् लोगों को वचाओं
काँस्कान	किसको किसको
शिवच्छाया	शिव की छाया
लक्ष्मीच्छाया	लक्ष्मी की छाया

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1– 1– शि तुक् 2– तुक् का आगम करता है 3– ङमोह्रस्वांदचि ङमुणनित्यम् 4– सुगण् + ईशः 5– सन् + अच्युटः 6– रू से पूर्व अनुस्वार 7– सम्पुम् कान् शब्दों के विसर्ग को सकार 8– पुमः खय्यम्परे 9– विसर्जनीयस्य सः 10– कानाग्रेडिते 11– छे च 12– पदान्ताद्वा

अभ्यास प्रश्न 2 – 1– (क) 2– (ख) 3– (क) 4– (ग) 5–(क) 6– (ग) 7– (क) 8– (ग) 9– (ग) 10– (क)

3. 7 सदर्भ ग्रन्थ सूची

1–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
लघुसिद्धान्त कौमुदी	वरदराजाचार्य	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी
2–वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी .	भट्टोजिदीक्षित	**प्रकाशक** शारदा निकेतन वी, कस्तूरवानगर

सिगरा वाराणसी

3–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
महाभाष्यम्	पतंजलि	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

3. 8 उपयोगी पुस्तकें

1–ग्रन्थ नाम	**लेखक**	**प्रकाशक**
लघुसिद्धान्त कौमुदी	वरदराजाचार्य	चौखम्भा संस्कृत

3.9. निबन्धात्मक प्रश्न

1. पदान्ताद्वा सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए ?